सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन

सफलता की कहानियाँ

भाग – २

निदेशक

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology

पालमपुर-176 061 (हि.प्र.) / Palampur-176 061 (H.P.)

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन

सफलता की कहानियाँ

भाग-२

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान,
पालमपुर-176061 (हि.प्र.)

CSIR-INSTITUTE OF HIMALAYAN BIORESOURCE TECHNOLOGY
PALAMPUR- 176 061 (H.P.)

© सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर (हि. प्र.)
प्रकाशन की तारीख: 26 फ़रवरी 2025

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-176061 (हि.प्र.),
भारत द्वारा प्रकाशित
फोन: +91-1894-230411, fax: +91-1894-230433
ईमेल: director@ihbt.res.in; वेब: http://ihbt.res.in

भव्य भार्गव
विकास सोनी

आवरण फोटो:
सामने: ग्लेडियोलस
पिछला पृष्ठ: लद्दाख मे ट्यूलिप की खेती

अस्वीकरण

यह प्रकाशन छात्रों, उत्पादकों, उद्यमियों और फूलों की फसलों में रुचि रखने वाले लोगों के उपयोग के लिए है। हालांकि, खेती, अनुसंधान और अन्य अनुप्रयोगों के लिए इस जानकारी के उपयोग के लिए पेशेवरों और विशेषज्ञों से विस्तृत साहित्य खोज और सलाह की आवश्यकता होगी।

प्रस्तावना

फूलों की खेती केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सुंदरता और आजीविका के संगम का प्रतीक है। "सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन - सफलता की कहानियाँ - भाग २" उन समर्पित व्यक्तियों और संस्थाओं के अथक प्रयास, नवाचार और अटूट प्रतिबद्धता का जीवंत प्रमाण है, जिन्होंने इस नाजुक कला और विज्ञान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

इस पुस्तक के पन्नों में सफलता की प्रेरक कहानियाँ संकलित हैं, जहां जिज्ञासा के बीज, उपलब्धियों के पुष्प में परिवर्तित होते हैं। सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन की उपलब्धियों को देखते हुए, हमें अनुसंधान, सहयोग और दृढ़ता की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव होता है। उपजाऊ खेतों से लेकर उन बाजारों तक, जहां फूलों को उनके प्रशंसक मिलते हैं, हर सफलता की कहानी फूलों की खेती के जटिल पारिस्थितिकी तंत्र को उजागर करती है।

यह पुस्तक वैज्ञानिकों की रचनात्मकता, किसानों की दृढ़ता और विभिन्न राज्यों के उत्साही नवाचारों को सामने लाती है। फूलों की पंखुड़ियों और तनों से परे, यह पुस्तक एक गहरे संदेश को प्रतिध्वनित करती है—सतत विकास, आर्थिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक समृद्धि का संदेश। यह इस बात को रेखांकित करता है कि किस प्रकार प्रकृति के साथ एक संतुलित संबंध संपूर्ण समुदायों को सशक्त बना सकता है। जैसे-जैसे हम इस खोजपूर्ण यात्रा में आगे बढ़ते हैं, ये कहानियाँ प्रेरणा के बीज बोने का कार्य करेंगी, सपनों को पोषण देंगी और फूलों की खेती एवं इससे जुड़े सभी क्षेत्रों के लिए एक उज्ज्वल, अधिक समृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगी। इस पुस्तिका में 50 किसानों की कहानियाँ और अनुभव संकलित किए गए हैं, जो छात्रों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, किसानों, पर्यटकों, उद्यमियों और अन्य हितधारकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। आशा है कि यह प्रयास फूलों की खेती उद्योग को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने में सहायक होगा।

दिनांक: 26 फ़रवरी 2025

सुदेश कुमार यादव

निदेशक

आमुख

"सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन - सफलता की कहानियाँ - भाग 2" में आपका स्वागत है।फूलों की नाजुक सुंदरता और उनकी मोहक सुगंध ने सदियों से मनुष्य को आकर्षित किया है। लेकिन इनकी आभा के पीछे वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और कृषि विशेषज्ञता का गहरा योगदान रहा है। सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन इस वैज्ञानिक और कलात्मक समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसका लक्ष्य आधुनिक तकनीकों के माध्यम से उच्च मूल्य वाले फूलों की खेती को प्रोत्साहित करना और किसानों की आय तथा उद्यमिता को बढ़ावा देना है।यह पुस्तक इस मिशन की शुरुआत से लेकर उसकी सफलता तक की प्रेरणादायक यात्रा का वर्णन करती है। इसमें उन समर्पित किसानों, वैज्ञानिकों और संस्थानों की कहानियां संकलित हैं, जिन्होंने नवाचार और कठिन परिश्रम से इस पहल को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। इसमें आपको अग्रणी अनुसंधान, टिकाऊ कृषि पद्धतियां और उद्यमशीलता के प्रयासों से जुड़ी प्रेरक कहानियां मिलेंगी, जिन्होंने भारत में फूलों की खेती की दिशा को नया आयाम दिया है। चाहे वह नई पुष्प किस्मों का विकास हो या अत्याधुनिक कृषि तकनीकों का समावेश, प्रत्येक सफलता की कहानी इस मिशन के व्यापक प्रभाव को दर्शाती है—किसानों की आर्थिक समृद्धि, व्यावसायिक संभावनाओं और पर्यावरणीय स्थिरता के रूप में।यह पुस्तक केवल उपलब्धियों का संकलन नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिकों, किसानों, नीति निर्माताओं, उद्योगों और बाजारों के बीच मजबूत साझेदारी की प्रेरणादायक गाथा भी है। यह सहयोग की परिवर्तनकारी शक्ति को दर्शाती है, जो कृषि क्षेत्र की जटिल चुनौतियों के समाधान में सहायक होती है और नई संभावनाओं के द्वार खोलती है।चाहे आप एक अनुभवी पुष्प उत्पादक हों, एक नवोदित उद्यमी, या प्रकृति प्रेमी, "सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन - सफलता की कहानियाँ - भाग 2" आपको फूलों की खेती से जुड़ी नवीनतम खोजों, प्रेरक अनुभवों और मूल्यवान सीखों से परिचित कराएगी।लेखक इस प्रेरणादायक यात्रा में मार्गदर्शन और समर्थन के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के निदेशक, डॉ. सुदेश कुमार यादव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। साथ ही, इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग देने के लिए दीप्ति, छेरिंग यूडोन, नीरज, गुलशन, रागिनी भारद्वाज, सौरभ कुमार और दीक्षित एच. एन. का विशेष धन्यवाद किया जाता है।हम आपको इस पुस्तक के माध्यम से फूलों की खेती की अनदेखी संभावनाओं को तलाशने और एक अधिक हरित, टिकाऊ एवं समावेशी भविष्य के निर्माण में भागीदार बनने के लिए आमंत्रित करते हैं।

दिनांक: 26 फ़रवरी 2025

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन: परिचय

फूलों की खेती एक तेजी से बढ़ने वाला उद्योग है जो सजावटी फसलों की खेती से संबंधित है। फूलों की खेती की सफलता के लिए नई किस्मों का विकास, खेती, विपणन और मूल्यवर्धित उत्पाद आवश्यक हैं। वैश्विक पुष्पकृषि व्यवसाय प्रति वर्ष 6-10% की दर से बढ़ रहा है। भारत फूलों की खेती के व्यापार में 18वें स्थान पर है और वैश्विक फूलों की खेती के व्यापार में इसकी हिस्सेदारी केवल 0.61 प्रतिशत है। घरेलू भारतीय बाज़ार प्रति वर्ष 20 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। भारत में विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ, फूलों की फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला की खेती के लिए अनुकूल हैं। खेती के लिए जनशक्ति की उपलब्धता और महानगरीय शहरों में फूलों की खेती के उत्पादों की बड़ी मांग भारत के लिए अन्य फायदे की बात है। गुलाब, कार्नेशन, गुलदाउदी, जरबेरा, ग्लेडियोलस, ऑर्किड, एन्थ्यूरियम, ट्यूलिप और लिली आदि अंतर्राष्ट्रीय कर्तित फूलों के व्यापार में महत्वपूर्ण फूलों की फसलें हैं। भारत में, सीएसआईआर फूलों की किस्मों को विकसित करने में सबसे आगे रहा है और ग्लेडियोलस, कार्नेशन, गुलदाउदी, जरबेरा, लिलियम, गैंदा, गुलाब, कैला लिली, राजनीगंधा, स्ट्रेलित्ज़िया, अलस्ट्रोमेरिया सहित कई फूलों की कृषि प्रौद्योगिकीयों का एक प्रमुख विकासकर्ता रहा है। सीएसआईआर-हिमालय जैवसम्पदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी) दशकों से फूलों की खेती की नई किस्मों को विकसित करने में अग्रणी हैं। संस्थान ने किसानों के बीच पुष्पीय फसलों को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस मिशन के माध्यम से शहरी और ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए, सीएसआईआर ने निम्नलिखित उद्देश्य के साथ फ्लॉरिकल्चर मिशन शुरू करने का निर्णय लिया, जिसमें विभिन्न कार्यक्षेत्र हैं:

मिशन उद्देश्य

सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके उच्च मूल्य वाले फूलों की खेती के माध्यम से किसानों की आय और उद्यमिता विकास को बढ़ाना।

कार्यक्षेत्र

- गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का उत्पादन
- फूलों की खेती के अंतर्गत क्षेत्रों का विस्तार
- अरबन फ्लॉरिकल्चर
- कटाई के बाद और मूल्य संवर्धन प्रौद्योगिकियों का विकास
- प्रभावी घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार संबंध स्थापित करना
- फूलों की नई किस्मों का विकास व राष्ट्रीय स्तर पर पंजीकरण

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के माध्यम से स्वरोजगार के कई अवसर सृजित हुए हैं । इस पुस्तक में हम इसे 50 किसानों की सफलता की कहानियों के रूप में बता रहे हैं ।

1. महिला उद्यम का एक अच्छा उदाहरण बन रही लेह-लद्दाख की ताशी और कुंजङ्ग ;

लेह-लद्दाख के ताशी अंगमों और कुंजङ्ग डोलमा युवा पीढ़ी के महिला उद्यमी है । ताशी ने इंजीनियरिंग व एम. बी.ए किया है, वही कुंजङ्ग ने बी.एस.सी व पर्यावरण अध्ययन में एम.एस.सी किया है और अब वो साथ में फूलों की खेती करते हैं । वह बताते हैं, फूलों की खेती में हमारी यात्रा सीएसआईआर-आईएचबीटी से प्राप्त बल्बों के सहयोग से वर्ष 2022 में शुरू हुई। वर्तमान में हम लिलियम, ग्लेडियोलस और ट्यूलिप की खेती कर रहे हैं। इससे पहले हमारा खेती मे कोई अनुभव नहीं रहा है परंतु हमे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत आईएचबीटी से तकनीकी ज्ञान द्वारा मदद मिलती रही है।

हमे श्री मोसेस कुंजंग, जो पूर्व उद्योग विभाग लेह-लद्दाख के निदेशक रह चुके हैं, उनके माध्यम से फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी हुई व उनके मार्गदर्शन से ही हम मिशन से परिचित हुए। फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत एक लाभार्थी के रूप में, हमें लिलियम और ग्लेडियोलस के बल्ब भी प्रदान किए गए। इसके अलावा, हमें फ्लॉरिकल्चर मिशन के परियोजना प्रमुख, डॉ भव्य भार्गव द्वारा दिए गए निरंतर समर्थन और विशेषज्ञ सलाह से बहुत लाभ हुआ है। फिलहाल हमारे पास 1 कनाल ज़मीन है जिस पर से आधा कनाल पर हम फूलों की खेती करते है। इसके अलावा हम अपनी खेती को अतिरिक्त क्षेत्रों में विस्तारित करने की संभावना तलाश रहे हैं, जिसका फिलहाल परीक्षण चल रहा है। फूलों की फसल बहुमुखी है व हर अवसर के लिए उपयुक्त है, चाहे वह खुशी का क्षण हो या दुख का, और फूलों को सार्वभौमिक रूप से पसंद किया जाता है। विभिन्न फूलों की कीमतें काफी अनुकूल हैं, जिससे यह अन्य सब्जियों और फलों की तुलना में एक लाभदायक व्यवसाय बन गया है। इसके अतिरिक्त, बल्ब उत्पादन की क्षमता के कारण बल्बनुमा फूल की खेती विशेष रूप से लाभदायक है। शुरुआत में फूलों की खेती मे समझ न होने के कारण; फूलों के जैविक चक्र और खेती की तकनीकों को समझना चुनौतीपूर्ण था। हालाँकि, समय और क्षेत्र अनुसार, प्रयोग के माध्यम से, हमने आवश्यक स्थितियों, जैसे मिट्टी की संरचना, सूरज की रोशनी, पानी देने की तकनीक आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। हमने विभिन्न तरीकों के साथ प्रयोग करके मूल्यवान अनुभव प्राप्त किया; कुछ सफल साबित हुए जबकि अन्य से परिणाम नहीं मिले। विभिन्न चुनौतियों के बावजूद, प्रत्येक परीक्षण ने हमें फूलों की खेती के जटिल भेदों के बारे में जानकारी प्रदान की। इस क्षेत्र में काम करने से न केवल हमारे कौशल में वृद्धि हुई बल्कि हमें आंतरिक शांति और प्रकृति से गहरा जुड़ाव भी मिला। फूलों के विकास और खिलने को देखकर हमें प्राकृतिक दुनिया के प्रति शांति और सराहना की भावना मिली। इस अनुभव ने हमें विभिन्न पुष्प नमूनों की खेती के लिए आवश्यक नाजुक संतुलन की गहरी समझ के लिए सक्षम बनाया।

इसके अलावा, फूलों की खेती में हमारी यात्रा न केवल फूलों की खेती के बारे में है, बल्कि एक टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के बारे में भी है। निरंतर सीख और अनुकूलन के माध्यम से, हम अपने फूलों की स्थिति और गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि करने में सक्षम हुए हैं, इस प्रकार हमने फूलों की खेती के क्षेत्र में एक सफल और पूर्ण उद्यम स्थापित किया है।

ताशी अंगमों और कुंजङ्ग डोलमा का संदेश

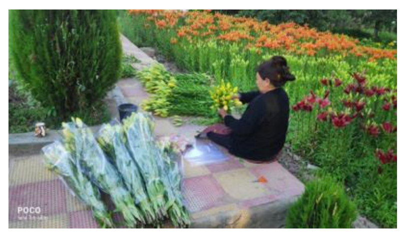

हम अन्य किसानों को बताना चाहेंगे कि उन्हें केवल फूलों की फसल उगाने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। वे उद्यमियों के रूप में गुलदस्ता निर्माण, फूलों की सजावट से इवेंट मैनेजमेंट, बल्ब उत्पादन, पुष्प विज्ञान और अन्य भी विभिन्न व्यवसायिक अवसरों में गहराई से खोज कर फूलों की खेती को नई राह पर ले जा सकते हैं।

2. कुन्दन लाल जी ने बनाई फूलों की खेती से एक अलग पहचान;

मेरा नाम कुंदन लाल है व मैं ज़िला मंडी के सिराज क्षेत्र से संबंध रखता हूँ। मैंने फूलों की खेती वर्ष 2009 से शुरू की थी। उस से पहले मै थोड़ा-बहुत मौसमी फसलों की खेती करता था, जिससे मेरा सिर्फ गुज़ारा ही हो पता था। मैंने अपनी शिक्षा बारहवीं तक पूरी की है और उसके बाद मै दिहाड़ी-मजदूरी का काम करता था, परन्तु वह काम मुझे ठीक नहीं लगा और मैंने खेतीबाड़ी करने का सोचा।
उसके बाद मैंने नौणी में एक कृषि सेमीनार में भाग लिया और वहाँ मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन और सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के बारे मे बताया गया, की कैसे फूलों की खेती पर यहाँ प्रशिक्षण मिलता है और कैसे हम अपने जीवन में फूलो की खेती को बेहतर ढंग से अपना सकते हैं।
इसके बाद मैंने आईएचबीटी पालमपुर से एक हफ्ते की ट्रैनिंग ली, जिसमें मुझे अच्छे से फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत फूलों की खेती पर ट्रैनिंग मिली। मुझे मिशन की सहायता से पहले तो लिलियम के बल्ब प्रदान किए गए जो कि काफी अच्छे चले जिस से काफी अच्छी कमाई हुई। उसके बाद हमें कार्नैशन, रजनीगंधा, जिप्सोफिला, गेंदे के कई प्रजातियों के पौधे मिले जिनकी प्रतिक्रिया भी काफी अच्छी रही। हाल ही में हमें परिक्षण हेतु पियोनि पुष्प की पौध सामग्री भी दी गई जो की सफल रही ।
मैं किसान सहकारी बिक्री और खरीद सोसाइटी, बगसियाड का अध्यक्ष भी हूँ व मेरे साथ गाँव के अन्य किसान भी जुड़े है, मेरी खुले फूलों की मार्केट चंडीगढ़ है और कर्तित पुष्पो की मार्केट ग़ाज़ियाबाद है। कुल मिलाकर अगर मैं प्रॉफ़िट की बात करूँ तो वर्ष 2023 में 19 से 20 लाख तक का लाभ हुआ था, जो की 70% कार्नैशन, 30% लिलियम, 10% खुले फूलों से हुआ है। आज की तारीख में मेरे पास 1000 वर्ग मीटर अपनी ज़मीन पर पॉलिहाउस है और 4000 वर्ग मिटर ज़मीन पर पॉलिहाउस लीस पर लिया हुआ है।

कुन्दन लाल जी का संदेश

बाकी मेरा सभी किसान भाइयों को यही संदेश है कि फूलों की खेती से हर महीने आपको इंकम आती है। फूलों की खेती का व्यापार एक अच्छा साधन है, इसे अपनाना किसी भी किसान के लिए फायदेमंद होगा।

3. कृष्ण चंद का फूलों की खेती तक का सफर;

मेरा नाम कृष्ण चंद है और मैं गाँव बहाल अर्जुन, (चकमोह डटवाल) ज़िला हमीरपुर का रहने वाला हूँ। मैंने बारहवीं तक की पढ़ाई की है और मेरी उम्र 50 वर्ष है। मैंने वर्ष 2016 से फूलों की खेती करना आरंभ किया, जो कि मैं 2500 वर्ग मीटर में करता आया हूँ। सबसे पहले मैंने गेंदा लगाया था, और उसके बाद कार्नेशन और जरबेरा जैसे फूलों की खेती करना शुरू किया।

कार्नेशन के फूल मुझे सीएसआईआर-आईएचबीटी से फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत ही प्राप्त हुए थे, जो मैंने 1000 वर्ग मीटर में लगाए थे और अब तक चल रहे हैं और अच्छा मुनाफा भी दे रहे हैं। मैं ज़्यादातर जैविक खेती ही करता हूँ, जिसके कारण फूलों के पौधे लंबे समय तक चलते हैं। पिछले वर्ष प्राकृतिक आपदा के कारण मेरी खेती पर असर पड़ा था, जिसके कारण मुझे 2500 वर्ग मीटर से घटकर 1000 वर्ग मीटर पर आना पड़ा।
अब मैं धीरे-धीरे फिर से फूलों की खेती को बढ़ाना चाहता हूँ। फूलों की खेती करने के बाद मैं वर्ष का 5-6 लाख तक कमा लेता हूँ। मेरी मार्केट दिल्ली और गाज़ीपुर है, वहाँ से हमें अच्छा मुनाफा हो जाता है।

कृष्ण चंद का संदेश

फूलों की खेती जो भी किसान करना चाहते हैं, जिनके पास अच्छी ज़मीन है, वे यह आराम से कर सकते हैं, परंतु यह मेहनत का कार्य है, केवल सब्सिडी के सहारे नहीं रह सकते।

4. शिमला के संदीप ठाकुर की फूलों की खेती की कहानी

मेरा नाम संदीप ठाकुर है, मैं मशोबरा , ज़िला शिमला का रहने वाला हूँ। मेरी उम्र 42 वर्ष है और मैंने पॉलीटेकनिक में पोस्ट ग्रेजुएशन की है। मैं वर्ष 2009 से फूलों की खेती कर रहा हूँ और हमने 3000 वर्ग मीटर में फूल लगाए हैं। मैं अलग-अलग पॉलीहाउस में कार्नेशन, गुलदाउदी और जिप्सोफिला जैसे फूलों की खेती करता हूँ। हमें सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन की जानकारी हमारे गाँव के किसानों से मिली थी। मैं फूलों की खेती करके वर्ष का लगभग 30 लाख तक का व्यवसाय करता हूँ। फूलों की खेती के लिए मैंने आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया है, जीससे उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में वृद्धि हुई है।
शुरुआत में, हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे कि पौधों की सही देखभाल, बाजार में प्रतिस्पर्धा और मौसम से जुड़ी समस्याएं। लेकिन धीरे-धीरे हमने इन सभी चुनौतियों का समाधान ढूंढा और अपनी खेती को सफल बनाया। हमने सीएसआईआर-आइएचबीटी के कृषि विशेषज्ञों से सलाह ली और अपने पॉलीहाउस में नई तकनीकों का प्रयोग किया।

संदीप ठाकुर का संदेश

फूलों की खेती से हमें न केवल आर्थिक लाभ हुआ है, बल्कि यह हमारे लिए एक संतोषजनक और सुखद अनुभव भी है। हम अपने फूलों को विभिन्न आयोजनों, विवाह समारोहों तथा धार्मिक स्थलों पर भेजते हैं, जिससे हमें अपने काम पर गर्व महसूस होता है।

5. मनोज कुमार के फूलों के प्रति लगाव से इसे व्यवसाय बनाने तक की कहानी;

मेरा नाम मनोज कुमार है, मैं गाँव खुनगी, तहसील थुनाग, ज़िला मंडी हिमाचल प्रदेश का निवासी हूँ , मैंने पोलिटिकल साइंस मे एम.ए. किया हुआ है। मैं वर्ष 2017 से फूलों की खेती कर रहा हूँ, इससे पहले हम सब्जियाँ और नकदी फसले उगाते थे। लेकिन कोविड महामारी के बाद काफी नुकसान उठाना पड़ा।
फिर एक दिन हमें समाचारों और मीडिया के द्वारा सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी मिली।
फूलों की खेती तो हम पहले से ही करते आ रहे थे परंतु, इस स्कीम के फ़ायदों के बारे में जानकारी लेने के बाद हमने इससे जुड़ने का सोचा।

मनोज कुमार का संदेश

फ्लॉरिकल्चर मिशन और सीएसआईआर-आइएचबीटी से प्रशिक्षण मिलने के बाद हमें बहुत सी नई चीज़ों के बारे मे जानकारी हुई। हमारी फूलों की खेती 800 वर्ग मीटर में फैली हुई है, और हम कार्नेशन, ओरिएंटल लिली और जिप्सोफिला और यूस्टोमा जैसे फूलों की खेती करते हैं।
हमारा मुख्य बाज़ार ग़ाज़ीपुर है तथा हमें फूलों की खेती से लगभग सालाना 3-4 लाख तक का फ़ायदा हो जाता है।

6. रवि शर्मा का फूलों की खेती करने का फैसला हुआ कामयाब;

मेरा नाम रवि शर्मा है। मेरी उम्र 52 वर्ष है और मैं 14 वर्ष से फूलों की खेती कर रहा हूँ, मैं पहले मौसमी फसलों के साथ-साथ फूलों की खेती करता आया हूँ। मैं अंतर-फसल लगाता हूँ व मैं 4 एकड़ ज़मीन पर फूलों की ही खेती करता हूँ, जीससे मुझे सालाना 3-4 लाख का फ़ायदा मिल जाता है।
मुझे सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में इंटरनेट के माध्यम से पता चला तथा यहाँ के अधिकारियों से फोन पर बात करके जानकारी मिली।

इस मिशन से जुड़ने के बाद मुझे प्रशिक्षण मिला व फूलों की देख-भाल और उनको बीमारियों से कैसे बचाया जा सकता है उसके बारे में जानकारी प्राप्त हुई। फूलों की खेती करने के साथ-साथ मैं चावल भी उगाता हूँ परंतु फूलों की खेती से ज़्यादा फ़ायदा मिलता है।

रवि शर्मा जी का संदेश

मैं सभी किसनों को कहना चाहूँगा की फूलों की खेती एक अच्छा विकल्प है। इसमें शुरुआत में कई चीज़ों को समझना पड़ता है परंतु फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत हमें प्रशिक्षण से लेकर सभी तरह की सहायता भी मिलती है। सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुड़ने और फूलों की खेती करने की सलाह, मैं सभी किसानों को देना चाहूँगा।

7. किसानी की मिसाल बने लुधियाना के गुरजीत सिंह;

मेरा नाम गुरजीत सिंह है और मैं लुधियाना का रहने वाला हूँ। मेरी उम्र 36 वर्ष है। मैंने दसवीं तक की पढ़ाई की है। हमारा परिवार 22-23 वर्ष से खेती करता आया है व खेतीबाड़ी पर ही निर्भर है, जिसमें मेरे पिता जी ज़्यादातर सब्जीयाँ ही लगाते थे, फिर आस पास के गाँव में किसनों को फूलों कि खेती करते देखा व उनसे बात करने पर पता चला की उन्हें इससे कितना फ़ायदा मिल रहा है। फिर मैंने भी धीरे-धीरे फूलों की खेती करना शुरू किया।

अब में सिर्फ फूलों की खेती ही करता हूँ। मैंने फूलों में गुलाब और गेंदा लगाया हुआ है। मैंने सारे फूल खुले वातावरण में 15-20 एकड़ में लगाए हुए हैं जिससे मुझे वर्ष का 18 लाख तक फ़ायदा हो जाता है। हमें सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में हमारे क्षेत्र में आई हुई सीएसआईआर-आईएसबीटी पालमपुर की टीम से पता चला। हमें उन्होने मिशन के बारे में जानकारी दी और वहाँ से मिलने वाले पौधों के बारे में भी बताया। उन्होंने हमारे खेतों का भी परिक्षण किया और कौनसी फसल हमारे लिए सबसे ज़्यादा लाभदायक होगी इसकी भी जानकारी दी। बाद में हमने आईएसबीटी से पौधे लिए जिनसे हमें बहुत लाभ हुआ। हम इन फूलों को लुधियाना में खुद कि दुकान पर ही बेचते हैं।

गुरजीत सिंह का संदेश:

फूलों की खेती से काफी लाभ होता है। मैं सभी को इसे अपनाने को बोलूँगा, किसान थोड़ा-थोड़ा कर के फूल लगा कर इसकी अच्छी मार्केटिंग कर सकते हैं, और जब आपकी पकड़ बन जाए तो ज्यादा स्केल पे लगा सकते हैं।

8. फूलों की खेती की जानी-मानी हस्ती गुरप्रीत शेरगिल की कहानी;

मेरा नाम गुरप्रीत शेरगिल है, वर्ष 1993 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में अपना डिप्लोमा पूरा करने के बाद, नौकरी के पीछे भागने के बजाय मैंने रोजगार के साधन के रूप में खेती को चुना। मैं खेती की पारंपरिक प्रणाली से कभी संतुष्ट नहीं था और आधुनिक कृषि पद्धतियों पर आधारित वैज्ञानिक साहित्य के व्यापक अध्ययन ने मुझे एक विविध और आधुनिक किसान बनने में मदद की। मैं सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर के साथ भी जुड़ा। वहाँ से मुझे बहुत से पौधे मिले और नई तकनीकों और किस्मों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।
मैंने गेहूं और धान के पारंपरिक फसल चक्र के अलावा मछली पालन शुरू करके डेयरी भी शुरू की। हर कदम पर मेरे पिता बलदेव सिंह शेरगिल ने मेरा मार्गदर्शन किया और मेरे भाई करणजीत सिंह शेरगिल ने मेरी सहायता की। हालाँकि, फूल मुझे हमेशा आकर्षित करते थे और मैंने अपने पिता और भाई के साथ वर्ष 1996 में गेंदे की खेती से शुरुआत करते हुए फूलों की खेती में कदम रखा। आज हम गेंदे के साथ-साथ ग्लेडियोलस, गुलजाफरी, गुलाब, स्टेटिस और जिप्सोफिला की खेती में एक लंबा सफर तय कर चुके हैं।

ज्ञान की मेरी खोज मुझे वर्ष 2002 में हॉलैंड ले गई, जहां मैंने 'फ्लोरिएड 2002' में भाग लिया, जो हर 10 वर्ष में आयोजित होने वाली एक अंतरराष्ट्रीय पुष्प प्रदर्शनी थी। मैंने अल्समीर, हॉलैंड में ताजे फूलों के दुनिया के सबसे बड़े नीलामी केंद्र का भी दौरा किया और मैंने ग्लासगो, यूके में 'वर्ल्ड रोज़ कन्वेंशन 2003' में भी भाग लिया।
मैं राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसान मेलों, पुष्प प्रदर्शनियों में नियमित भागीदार रहा हूं। यही नहीं, मेरे पास आईएआरआई की फ़ेलोशिप भी है। हम नवीनतम और नवीन कृषि तकनीकों के बारे में जानने के लिए आईएआरआई, सीएसआईआर-आईएसबीटी जैसे और भी प्रतिष्ठित संस्थानों के वैज्ञानिकों से मिलते रहते हैं। अपने ज्ञान को अद्यतन रखने के लिए मैंने 'चेंज खेती', 'खेती दुनिया', 'मॉडर्न खेती' और 'फ्लॉरिकल्चर टुडे' पत्रिकाएँ भी पढ़ीं उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

गुरप्रीत शेरगिल का संदेश

मैं सभी किसनों को कहना चाहूँगा, की फूलों की खेती एक बहुत बढ़िया उद्यम है, इसकी मार्केट का ज्ञान और सही और नवीन कृषि तकनीकों को जानना जरूरी है, अगर किसान इन पहलुयों को समझ ले तो फूलों की खेती से बढ़िया फसल कोई नहीं। इसमे मुनाफा अधिक है और मेहनत दूसरी खेतियों से कम है।

9. फूलों की खेती: एक प्रगतिशील अनुभव;

मेरा नाम हरिंदर पाल सिंह है और मैं अमृतसर, पंजाब का निवासी हूँ। मेरी उम्र 58 वर्ष है और मैंने ग्रेजुएशन की है। लगभग 24 वर्षों से मैं फूलों की खेती का प्रशिक्षण और अनुभव अर्जित कर रहा हूँ। मेरा खेती करने का क्षेत्र लगभग 7-8 एकड़ है और मैं इसमें ग्लैडियोलस, गेंदा और ट्यूबरोज़ जैसे विभिन्न प्रकार के फूल उत्पादित करता हूँ। इसके साथ ही, मैं गेहूं और अन्य अनाजों की फसलों की भी खेती करता हूँ।
मुझे अमृतसर के हॉर्टिकल्चर विभाग से सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। वहाँ से मुझे सीएसआईआर-आईएसबीटी के बारे में भी जानकारी मिली। इस मिशन के माध्यम से, हमारे लिए नवीनतम तकनीकी उन्नति और फूलों की खेती में अनुसंधान विकास की सुविधा प्राप्त होती है। फूलों की खेती मेरे लिए एक पेशेवरीकृत क्षेत्र है, जिसमें मैंने अपने अनुभव और शिक्षा का उपयोग करके उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों का निर्माण किया है। इसके साथ ही, मैंने अपने क्षेत्र में नवाचारिक तकनीकी समाधानों का भी उपयोग करते हुए अपने कृषि उत्पादों की वृद्धि की है।

मेरा लक्ष्य है कि आने वाले समय में और भी नए तकनीकी उत्पादों का अनुसंधान करके, फूलों की खेती में अपने योगदान को बढ़ाना और अपने क्षेत्र के किसान भाइयों की आय को बढ़ाना है। साथ ही, मैं अपनी क्षमताओं को बढ़ाकर और बेहतरीन प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने क्षेत्र के युवाओं को भी इस क्षेत्र में प्रेरित करना चाहता हूँ।

हरिंदर पाल सिंह का संदेश

फूलों की खेती मेरे लिए एक प्रेम और पेशेवरी का प्रतीक है, और मुझे गर्व है कि मैं इस क्षेत्र में अपना योगदान दे पा रहा हूँ। मेरी यात्रा अभी भी जारी है और मैं आगे बढ़कर भी अपनी खेती में नई ऊर्जा और स्थायीता लाने का प्रयास करूँगा।

10. फूलों की खेती, नए दिशानिर्देश और संभावनाएं;

भारतीय कृषि व्यवसाय में नए उदाहरणों और नवाचारों की आवश्यकता हमेशा से होती रहती है। ऐसी ही कहानी है प्रभजोत सिंह की जो होशियारपुर, पंजाब के निवासी है, जो पिछले तीन वर्षों से फूलों की खेती से जुड़े हुए है। उनका मानना है, उनका उद्यम और प्रयत्न नए दिशानिर्देश और संभावनाओं को समझने की दिशा में है।

वह बताते हैं, मेरी शिक्षा एमबीए मार्केटिंग में हुई है, जो मुझे व्यापारिक मामलों की गहरी समझ प्रदान करती है। फूलों की खेती में प्रवेश करते समय, मैंने विभिन्न उत्पादों और उनके बाजार में संभावित मूल्यों का अध्ययन किया।

मेरे पास 1 एकड़ जमीन है, जहां मैंने गेंदा और ग्लैडियोलस के फूल लगाए हैं। ये फूल मैं पॉलीहाउस में उत्पादित करता हूं, जो की मुझे उचित आधारित और नियंत्रित माहौल प्रदान करता है। मेरे एक मित्र के माध्यम से मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन और सीएसआईआर-आईएचबीटी के बारे में सूचना मिली। ये मिशन और प्रोग्राम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए साकारात्मक दिशा मे कदम उठाते है, जो मेरे लिए एक नए अवसर का मौका है। मैं गन्ना भी लगाता हूं, परंतु मुझे अनुभव और गहराई से मालूम हो चुका है कि फूलों की खेती में अधिक लाभ हो सकता है। इसमें लागत कम होती है और मुनाफा अधिक होता है। इस नए क्षेत्र में मेरे लिए एक संवेदनशीलता और उत्साह से भरी भविष्य की उम्मीद है।

प्रभजोत सिंह जी का संदेश

फूलों की खेती एक विकसित और लाभकारी व्यवसाय का संदर्भ बन रहा है। नए तकनीकी और उत्पादन प्रक्रियाओं के साथ, किसानों को नए और सकारात्मक संभावनाओं का सामना करना होगा।

11. फूलों की खेती: किसान की अपनी जुबानी;

मेरा नाम प्रदीप कुमार है और मैं हिमाचल प्रदेश के ज्वालामुखी, कांगड़ा ज़िले का रहने वाला हूं। मैंने अपनी शिक्षा बारहवीं कक्षा तक पूरी की है और पिछले चार वर्षों से सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के माध्यम से फूलों की खेती कर रहा हूं। मेरी खेती में मुख्य रूप से गेंदे का फूल शामिल है और मैं लगभग 5 कनाल से अधिक भूमि पर इन फूलों की खेती करता हूं। जिससे लगभग मैं 4-5 लाख कमा लेता हूँ

मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में अपने गांव के किसान महेंद्र सिंह से पता चला। इस मिशन के तहत, मैंने अपनी खेती को और भी उन्नत बनाने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त, मैं मक्की भी लगाता हूं और अपने बगीचे में विभिन्न प्रकार के फल और सब्जियां उगाता हूं। मेरे फूलों की खेती का प्रमुख बाजार ज्वालामुखी मंदिर और आसपास के बाजार हैं, जहां मैं अपने फूलों को बेचता हूं।

फूलों की खेती मेरे लिए सिर्फ एक व्यवसायिक क्रिया नहीं है, बल्कि धर्म और आस्था का प्रतीक भी है। मैंने इसमें नई तकनीकों का भी अध्ययन किया है और अपनी खेती को सुरक्षित और उत्तम बनाने के लिए प्रयासरत रहता हूं। मेरी इस सफलता में मेरे परिवार का साथ और मेरे गांव के समुदाय का समर्थन भी है, जिसपर मुझे गर्व है। फूलों की खेती मेरे लिए एक प्रेरणा का स्रोत और एक अच्छा जीवन जीने की कला भी है ।

12. फूलों की खेती : एक किसान का अनुभव और उम्मीद;

मेरा नाम साहिल है और मैं हरियाणा के गाँव निमड़-बडेसरा का रहने वाला हूँ। मैंने अपनी शिक्षा ग्रेजुएशन तक पूरी की है और मेरी उम्र 23 वर्ष है। पिछले दो सालों से मैं फूलों की खेती कर रहा हूँ, जिसमे गुलाब और गेंदा प्रमुख है, 1 एकड़ भूमि में गुलाब और 2 एकड़ भूमि में गेंदे के पौधे लगाए हुए हैं, फूलों की खेती को मैं मेरा प्रमुख व्यापार बनाना चाहता हूँ, मैंने बागवानी की ट्रेनिंग भी ली है, जिससे मुझे खेती के कार्यों में नई तकनीकों का प्रयोग करने में मदद मिलती है।

सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में भी मुझे अपने कामकाजी किसान मित्र से पता चला था । इस मिशन के ज़रिए मैंने अपनी खेती को प्रगति की दिशा में ले जाने के लिए मेहनती कदम बढ़ाए । मेरी खेती के 1 एकड़ से मुझे लगभग 1-2 लाख रुपये का लाभ होता है, जो कि मेरे लिए एक बड़ी सफलता है। मुझे फूलों की खेती करना अच्छा लगता है और मैं इसे और भी बढ़ाना चाहता हूँ।

साहिल का संदेश

फूलों की खेती मेरे लिए केवल एक व्यावसायिक गतिविधि नहीं, बल्कि मेरी रुचि और पसंद भी है, जिसमें परिश्रम करना और नई चीजें सीखना मुझे पसंद है। जो मेरी तरह नए युवा किसान फूलों की खेती मे जुड़े हैं, मैं उनको कहना चाहता हूँ की यह एक अच्छे व्यवसाय का माध्यम है ।

13. नैनीताल से फूलों की खेती: एक प्रेरणादायक कहानी;

मैं पंकज सिंह नैनीताल, उत्तराखंड का निवासी हूँ, मेरी उम्र 34 वर्ष है। मेरी बचपन से ही खेती में रुचि रही है, और वर्तमान मे लगभग 8 वर्षों से फूलों की खेती कर रहा हूँ। मैं 4 एकड़ जमीन पर गुलाब, कार्नेशन, जिप्सोफिला और ग्लेडियोलस की खेती कर रहा हूँ।

हमें कोविड-19 के दौरान खेती में बहुत से संकट झेलने पड़े, लेकिन फिर भी हमने हार नहीं मानी और फ्लॉरिकल्चर मिशन के सहारे और सीएसआईआर-आईएचबीटी के मार्गदर्शन से नए उद्यम की शुरुआत की। आज हम लगभग 5-6 गुना मुनाफा कमा रहे हैं।

पंकज सिंह का संदेश

मैं अपने साथी किसान भाइयों को सलाह देना चाहूँगा कि फूलों की खेती एक बहुत ही उत्तम विकल्प है। फूलों की खेती हमे आर्थिक समृद्धि और संतोष से भर देती है।

फ्लॉरिकल्चर मिशन ने मेरी जिंदगी में नई उम्मीद भरी है। इससे जुड़कर मुझे खुद को बेहतर समझने और समर्पित करने का अवसर मिला है।

14. काष्ठकार से फूलों की किसानी तक का सफर;

मेरा नाम अमित चौहान है और मैं शिमला के जुंगा तहसील के गाँव भालावाग में रहता हूँ। मेरी उम्र 44 साल है और मैंने दसवीं तक की पढ़ाई की है। मैं फूलों में कार्नेशन की खेती करता हूँ और इस काम में मुझे 15 साल हो गए हैं। मेरा काष्ठकारी का काम भी ठीक चल रहा था, लेकिन जब मैंने गाँव में लोगों को फूलों की खेती मे अच्छी कमाई करते देखा, तो मैंने भी इसे अपनाने का सोचा। अब मैं पूरी तरह से फूलों की खेती में ही लगा हुआ हूँ और लकड़ी का काम छोड़ दिया है।
मुझे फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में अपने ही गाँव के लोगों से जानकारी मिली और फिर मैंने सीएसआईआर-आईएचबीटी से प्रशिक्षण लेकर अपने फूलों की खेती को 3 से 4 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में बढ़ाया। हमारी फूलों की मार्केट गाज़ियाबाद में है और मुझे यहाँ से अच्छा मार्गदर्शन और मार्केटिंग की सुविधा मिलती है। मेरी आमदनी का प्रमुख स्रोत फूलों की खेती है।

अमित चौहान का संदेश

मेरा अनुभव यह सिखाता है कि फूलों की खेती से किसानों को अच्छा मुनाफा हो सकता है। मैं अपने सभी किसान भाइयों को यही सलाह देना चाहता हूँ कि अगर वे भी इस क्षेत्र में काम करना चाहते हैं, तो फूलों की खेती उनके लिए एक बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है। फूलों की खेती ने मुझे आर्थिक रूप से काफी फायदा पहुँचाया है।

15. फूलों की खेती: 72 वर्षिय किसान की नई सोच की कहानी;

मेरा नाम श्री राम है और मैं गाँव साई कनैतन, बिलासपुर का निवासी हूँ। मेरी उम्र 72 साल है और मैंने आठवीं तक पढ़ाई की है। मेरा कृषि के क्षेत्र में अनुभव 45 साल से अधिक है। मैंने पहली बार वर्ष 2006 से फूलों की खेती शुरू की थी।
मेरे पास 4 पॉलीहाउस हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल 3200 वर्ग मीटर है। इनमें मैंने गुलदाउदी, जरबेरा और कार्नेशन जैसे विभिन्न प्रकार के फूल उगाए हैं । मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में बिलासपुर के हॉर्टिकल्चर विभाग से पता चला, उसके बाद मुझे सीएसआईआर-आईएचबीटी से प्रशिक्षण भी मिला। जिसने मुझे फूलों की खेती में एक सफल किसान बनने में मदद की। आईएचबीटी के प्रशिक्षण ने मुझे फूलों की खेती मे बीमारियों से बचने और उत्तम उत्पादन के लिए आवश्यक तकनीकी ज्ञान प्रदान किया। उसके बाद से यही मेरा पसंदीदा काम बन गया है।
फूलों की खेती न केवल मेरे लिए एक आत्मीय कार्य सिद्ध हुआ, बल्कि इससे मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति भी मज़बूत हो गई है। हमारा बजट और बचत बढ़ी है और हमें हर साल 5-6 लाख रुपये तक की कमाई होती है। इस सफलता में समय-समय पर खाद, पानी और कीटनाशक का सही इस्तेमाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किसानों के लिए खेती में निवेश करना और उसे सही तकनीक से संचालित करना बहुत महत्वपूर्ण है। फूलों की खेती एक छोटे से शुरुआत से बड़े स्तर पर उन्नति के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है, यदि इसे ध्यान और संवेदनशीलता से किया जाए।

श्री राम का संदेश

मेरा संदेश है कि जो किसान फूलों की खेती करने की सोच रहे हैं, वे ध्यान दें कि इसमें नियमित देखभाल और उत्तम प्रबंधन की जरूरत होती है। इसके साथ ही खेती का मार्गदर्शन विशेषज्ञों से लेना न भूलें।

16. संजीव कुमार ने की फूलों की खेती से एक नई शुरुआत

मेरा नाम संजीव कुमार है और मैं हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला, बनखंडी का निवासी हूँ। मेरी उम्र 42 वर्ष है और मैंने 12वीं तक की शिक्षा पूरी की है। मैंने वर्ष 2023 में गेंदे के फूलों की खेती शुरू की थी, इससे पहले मैं खीरे और टमाटर की खेती करता था। दोनों फसलों की खेती के बाद मुझे फूलों की खेती अधिक लाभदायक और सही विकल्प प्रतित हुआ। मेरे पास कुल 40 कनाल की जमीन है, जिसमें से मैं 3 कनाल में फूलों की खेती करता हूँ। फूल लगाने में मुझे कुल 10,000 रुपये का खर्चा आया और मुझे 40,000 रुपये का लाभ हुआ।

मैने फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में संजना जी से जानकारी प्राप्त की, जो कि बनखंडी हॉर्टिकल्चर विभाग की अधिकारी हैं। इसके बाद, हमारे गाँव में पालमपुर के सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के अधिकारी श्री विकास सोनी ने भी फूलों की खेती से संबंधित जानकारी प्रदान की।

संजीव कुमार का संदेश

मेरा संदेश मेरे किसान भाइयों के लिए यह है कि हम मिलकर फूलों की खेती करें, जिससे हमें अधिक बिक्री के माध्यम से अधिक मुनाफा हो सके। इससे हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और हमारी विकास योजनाओं में सहायता मिलेगी।

फूलों के क्षेत्र में हमारे यह उन्नत कदम भरोसे और सफलता की ओर हमें ले जा रहे हैं।

17. बनखंडी के किसान की फूलों की खेती से जुड़ने की कहानी

मेरा नाम तिलक राज चौधरी है और मैं हिमाचल प्रदेश के बनखंडी, ज्वालामुखी के गाँव कथोग का निवासी हूँ। मेरी उम्र 51 वर्ष है और मैंने माध्यमिक शिक्षा पूरी की है। मैंने वर्ष 2013 में गेंदे और गुलाब की खेती शुरू की थी, जिससे पहले मैं मक्की और कनक की खेती करता था। दोनों फसलों में मुझे फूलों की खेती अधिक लाभप्रद लगी।

मेरे पास कुल 15 कनाल की ज़मीन है, जिसमें से मैं 8 कनाल पर फूलों की खेती करता हूँ। 8 कनाल भूमि पर फसल लगाने में मुझे कुल 25 हज़ार रुपये का खर्चा आया व इससे मुझे 1 लाख रुपये का लाभ हुआ।

शुरुआती दिनों में मुझे फूलों की बीमारियों जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, लेकिन मैंने इन समस्याओं का समाधान पाने के लिए सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर हिमाचल प्रदेश से प्रशिक्षण लिया। उसके बाद मुझे ज़्यादा दिक्कतो का सामना नहीं करना पड़ा। मैंने अपने कृषि अनुभव के माध्यम से फूलों की खेती में नई दिशाएँ खोली हैं और आगे बढ़ने के लिए अन्य किसान भाइयों को भी प्रेरित किया है। इससे हमारे गाँव की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और हमारी उत्पादकता में वृद्धि होगी।

तिलक राज का संदेश

मेरा संदेश मेरे किसान भाइयों के लिए है कि वे फूलों की खेती मे अग्रसर रहे फूलों की बाजार में अधिक मांग होती है और इससे अधिक आय प्राप्त करने की संभावनाएं भी होती हैं।

18. फूलों की खेती: निरंजन लाल की सफलता की कहानी;

मेरा नाम निरंजन लाल है और मैं पपरोला ज़िला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश का एक स्थायी निवासी हूँ। मेरी उम्र 52 वर्ष है और मेरी शिक्षा दसवीं तक पूरी हुई है। मैंने 2003 से फूलों की खेती शुरू की और अब तक मैंने गेंदा, गुलाब और ग्लैडियोलस के फूल उगाए हैं। वर्ष 2003 से पहले, मैं सिर्फ गुलदाउदी की खेती करता था जो की मैं सिर्फ शौकिया तौर पर ही कर पाता था। मेरे पास कुल मिलाकर 40 कनाल का क्षेत्रफल है, जिसमें से 5-6 कनाल पर ही फूलों की खेती हूँ ।

फूलों की खेती मेरे लिए एक अच्छा साधन साबित हुआ है। हर सीजन मुझे 1 कनाल से 25000 हज़ार तक का मुनाफा हो जाता है, जो मेरे लिए बहुत फायदेमंद साबित होता है। मुझे फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में डॉ. मार्कंडे से पता चला, और उनके संपर्क से सीएसआईआर-आइएचबीटी के डॉ. भार्गव से मिलकर मैंने इस मिशन के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की। इस मिशन ने मुझे सही समय पर मदद, ज्ञान और तकनीकी सहायता प्रदान की, जिससे मेरी खेती में सुधार आया।

निरंजन लाल का संदेश

मेरा किसान साथियों को संदेश है कि हम समूह में मिलकर खेती करें, ताकि मार्केटिंग के लिए जो कठिनाईयाँ आती हैं, उन्हें कम किया जा सके। इससे न केवल हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, बल्कि बेरोज़गारी भी कम होगी।

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन ने मेरी जिंदगी को नई दिशा दी है और मुझे उम्मीद है कि यह मिशन और भी किसानों को फायदा पहुंचाएगा।

19. फूलों की खेती: एक सकारात्मक दिशा;

मेरा नाम सतीश शर्मा है और मैं तरहेल, ज़िला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश का निवासी हूँ। मेरी उम्र 68 वर्ष है और मैंने अपनी शिक्षा दसवीं तक पूरी की है। मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में अपने रिश्तेदार से पता चला, जो कि सीएसआईआर-आइएचबीटी में कार्यरत हैं।

मैंने 2023 से फूलों की खेती शुरू की है, मेरे पास 11 कनाल ज़मीन है, जिसमें से मैंने 2 कनाल पर फूलों की खेती शुरू की है। पिछले वर्ष, मैंने 5 हजार रुपये की लागत से 30 हजार रुपये का लाभ प्राप्त किया और आगे चल कर मैं और भी अच्छे स्तर पर इसे करना चाहूँगा।

सतीश शर्मा का संदेश

मैं अपने साथी किसान भाइयों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि फूलों की खेती भी एक अच्छा आय का साधन हो सकता है। फ्लॉरिकल्चर मिशन से हमें समय-समय पर सहायता मिलती रहती है, जिससे हमें किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता। फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत नई तकनीकी जानकारी, खेती सलाह और बाजार में उत्पादों की पहचान करने में मदद मिलती है।

फूलों की खेती न केवल मेरे लिए एक आर्थिक स्वावलंबन का साधन है, बल्कि इससे मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आया है। मेरे साथी किसान भाइयों को भी इसे अपनाने की प्रेरणा देने का मेरा उद्देश्य है। इस प्रकार, फूलों की खेती और फ्लॉरिकल्चर मिशन ने मेरी जिंदगी में एक नई उम्मीद और सकारात्मक बदलाव लाया है।

20. फूलों की खेती: चेतराम की सफलता की कहानी;

मेरा नाम चेतराम है और मैं बगस्याड़ ज़िला मंडी का निवासी हूँ। मेरी उम्र 43 वर्ष है और मैंने अपनी शिक्षा 12वीं तक पूरी की है। मैं वर्ष 2017 से अपने खेतों में कार्नैशन और जिप्सोफिला के फूलों की खेती कर रहा हूँ। मेरे पास कुल 10 से 11 बीघा ज़मीन है, जिसमें से मैंने इन फूलों को 1100 वर्ग मीटर में लगाया हुआ है।
इन सालों में मैंने अपनी खेती से अच्छे लाभ प्राप्त किए हैं। इस बार मुझे 100 वर्ग मीटर के क्षेत्र में 17000 रुपये तक का लाभ प्राप्त हुआ है। मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में दीपाल जी से पता चला, जो कि मेरे क्षेत्र के ऐग्रिकल्चर अधिकारी हैं। इस मिशन ने मुझे खेती के प्रति नए दृष्टिकोण और तकनीकी सहायता प्रदान की है, जिससे मेरी खेती में सुधार आया है।

चेतराम का संदेश

मैं अपने साथी किसान भाइयों को कहना चाहूँगा, फूलों की खेती एक सकारात्मक व सशक्त साधन हो सकती है, इसलिए इसे अपनाने की प्रेरणा देना चाहता हूँ। फ्लॉरिकल्चर मिशन ने मेरी जिंदगी को एक नई दिशा दी है और मुझे आशा है कि इससे और भी कई किसानों को लाभ पहुँचेगा। फूलों की खेती ने मेरे जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन लाया है और मैं आगे भी इसे बढ़ावा देने चाहूँगा।

21. नागेंदर चंद ने अपनाई फूलों की खेती;

मेरा नाम नागेंदर चंद है, मैं बैजनाथ ज़िला काँगड़ा का रहने वाला हूँ, मेरी उम्र 52 वर्ष है, मैं वर्ष 1986 से फूलों की खेती से जुड़ा हुआ हूँ। शुरुआत में, जब मैंने फूलों की खेती करना शुरू किया, तो मुझे कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। मैंने पहले अनेक बार पौधे लगाए, परंतु समझ में नहीं आता था कि किस तरह से उन्हें सही ढंग से उनकी देख-भाल करनी चाहिए। फिर मैंने काँगड़ा फ्लॉरिकल्चर सोसाइटी के साथ जुड़कर अपने ज्ञान को बढ़ाने की कोशिश की।
सोसाइटी के माध्यम से मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी मिली, जिसने मेरी कृषि प्रक्रियाओ को मजबूत किया। सीएसआईआर-आइएचबीटी से प्राप्त प्रशिक्षण ने मेरे फूलों की खेती में सुधार किया और मुझे नए तकनीकी तरीकों का पता चला। अब मैं अपनी ज़मीन पर गेंदे की मुख्यत: खेती करता हूँ, जिससे मुझे निरंतर आय प्राप्त होती है।
मैं आज 2 कनाल ज़मीन पर फूलों की खेती कर रहा हूँ। जिसमे मुख्य रूप से मैं गेंदे की खेती करता हूँ। इन फूलों को मैं आस-पास के मंदिरों और बाजारों में बेचता हूँ। सिर्फ गेंदे की खेती से मुझे साल का लगभग 1.5-2 लाख तक का फायदा हो जाता है।

नागेंदर चंद का संदेश

फूलों की खेती एक बहुत अच्छा व्यवसाए है, यह अन्य खेती और फसलों की बजाए लाभप्रद है। मैं अपने किसान भाइयों और बहनों को फूलों की खेती अपनाने की सलाह दूँगा।

22. फूलों की खेती से बेहतर हुई कर्नेल सिंह की ज़िंदगी

मेरा नाम कर्नेल सिंह है। मैं गाँव करारी, ज़िला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश का निवासी हूँ। मेरी उम्र 48 वर्ष है। मैंने 12वीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है। मैं वर्ष 2019 से कार्नेशन, जिप्सोफिला, यूस्टोमा और ग्लैडियोलस की खेती कर रहा हूँ। मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में मेरे गाँव के किसान संगठन से पता चला, जिसने मेरी किसानी को फूलों की खेती में आगे बढ़ाने में मदद पहुंचाई।

मेरी कुल ज़मीन का क्षेत्रफल 13 हज़ार वर्ग मीटर है, जिसमें से मैंने 4 हज़ार वर्ग मीटर में फूलों की खेती की है, कार्नेशन की खेती पर 1 हज़ार वर्ग मीटर पर मुझे 4 लाख रुपये का लाभ हुआ। जिप्सोफिला मे 1 हज़ार वर्ग मीटर क्षेत्र में मुझे 2.5 लाख रुपयों का लाभ हुआ और यूस्टोमा (Eustoma) 600 वर्ग मीटर क्षेत्र पर लगाएं है जिससे मुझे 7-8 लाख तक का फायदा हुआ है। सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन ने हमारी समय-समय पर मदद की है जिससे हमें फूलों की खेती करते हुए ज्यादा समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।

कर्नेल सिंह का संदेश

मेरा किसान भाइयों को संदेश है कि फूलों की खेती एक बहुत ही लाभदायक व्यवसाय है, जिससे न केवल हम अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं बल्कि यह रोजगार का उचित स्रोत भी प्रदान करता है। फूलों की खेती न केवल हमारे जीवन में वित्तीय स्थिरता लाती है, बल्कि यह हमारी स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी पहचान बनाने में मदद करती है। मैं आप सभी किसान भाइयों से अनुरोध करता हूँ कि आप भी फूलों की खेती को एक नए और सफल व्यवसाय के रूप में अपनाएं और इससे लाभान्वित हो ।

23. पंजाब के किसान ने अपनाई फूलों की खेती

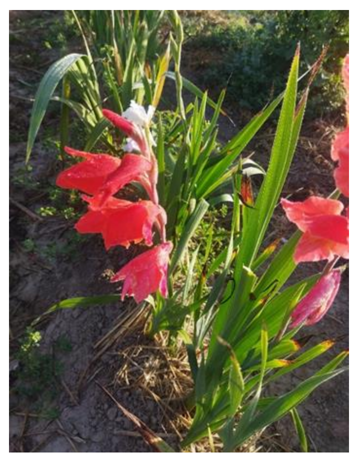

मेरा नाम अमरजीत सिंह है, मैं पंजाब के गाँव मौड़ खुर्द, ज़िला बठिंडा का निवासी हूँ। वर्ष 2017 से मैं गेंदा, ग्लैडियोलस और गुलाब की खेती कर रहा हूँ। मेरे पास कुल 16 एकड़ जमीन है, जिसमें से मैं 1 एकड़ ज़मीन पर सिर्फ फूलों की खेती करता हूँ।

मुझे पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना से सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी मिली, जिसने मेरी खेती को और भी सुदृढ़ बनाने में मदद की है। मैंने अपनी फूलों की फसल लगाने से 1 एकड़ ज़मीन पर लगभग 1.5 लाख रुपये का लाभ उठाया है। सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन की ओर से मुझे उचित रोपण सामग्री के साथ उचित तकनीकी सलाह भी मिली, जिससे मेरी खेती का प्रबंधन और फसल की देखभाल में सुधार हुआ।

अमरजीत सिंह का संदेश

मैं अपने सभी किसान भाइयों को यह कहना चाहता हूँ कि फूलों की खेती एक बहुत ही लाभदायक व्यवसाय है, जो रोज़गार का एक अच्छा साधन भी है। इसके अलावा, यह हमें आर्थिक स्थिरता प्रदान करने में मदद करता है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप भी इस व्यापार को समझें और अपने क्षेत्र में फूलों की खेती को बढ़ावा दें, ताकि हम सभी मिलकर अपने कृषि क्षेत्र को मजबूत और समृद्ध बना सकें।

24. जितेंद्र सिंह ने विदेश से लौटकर बनाई फूलों की खेती मे पहचान;

मेरा नाम जितेंद्र सिंह कश्यप है, मैं अंदराड गाँव, जिला कांगड़ा का निवासी हूँ और मेरी उम्र 43 वर्ष है। मैं अपनी एम. कॉम की शिक्षा पूरी करने के बाद विदेश में काम कर रहा था, लेकिन मैने अपने गाँव लौटने का निर्णय लिया। यहाँ आने के बाद मुझे रोज़गार की आवश्यकता थी, जिसके चलते मैंने मेरे दोस्तों की सलाह पर कांगड़ा हॉर्टिकल्चर विभाग से संपर्क किया और फूलों की खेती करने का चुनाव किया।

मैंने वर्ष 2014 से फूलों की खेती में अपनी आजीविका बनाई है व मुझे विभिन्न अनुभवी किसानों से मिलकर फूलों की खेती के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला। सीएसआईआर-आईएचबीटी से जुड़कर, मैंने पॉलिहाउस लगाकर ग्लेडियोलस से अपनी खेती शुरू की, और अब मैं कार्नेशन, जर्बेरा और जिप्सोफिला की खेती कर रहा हूँ। मेरे पास 4000 वर्ग मीटर की ज़मीन है, जिसमें मैंने फूलों की खेती को विस्तार दिया है।

मुझे फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी सीएसआईआर-आईएचबीटी के वैज्ञानिक डॉ. भव्य भार्गव से मिली, जिससे मुझे फूलों की खेती करने में काफी सहायता मिली। विशेष रूप से कोविड-19 के दौरान मेरी कई समस्याओं में सीएसआईआर-आईएचबीटी ने मेरी मदद की है। मेरे फूलों की बिक्री दिल्ली बाज़ार में होती है और वर्षभर में मुझे लगभग 12-13 लाख रुपये का फायदा हो जाता है।

जितेंद्र सिंह कश्यप का संदेश

मेरा संदेश मेरे साथी किसान भाइयों को यह है कि अगर आपके पास कृषि योग्य ज़मीन है तो उसका उपयोग फूलों की खेती के लिए करें। इससे न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि यह आपके लिए एक स्थायी और सुरक्षित रोज़गार का साधन भी हो सकता है।

25. राजेन्द्र कुमार ने बनाया फूलों की खेती को एक विकसित व्यवसाय;

शिमला के गाँव कोट कुफ़री मशोबरा के किसान राजेन्द्र कुमार की उम्र 37 वर्ष है। इन्होने आईटीआई की शिक्षा ग्रहण की है और वर्ष 2010 से फूलों की खेती कर रहे है। वे अब तक अनेक प्रकार के फूलों की खेती कर चुके हैं, जैसे कि कार्नैशन, जिप्सोफिला और ऑर्नमेन्टल केल । वर्तमान में वह 2500 वर्ग मीटर पर फूलों की खेती कर रहे है, जिससे उनको काफी फायदा हो रहा है। उनका मुख्य बाज़ार गज़ीपुर है।

वह बताते है कि मुझे फ्लॉरिकल्चर मिशन व सीएसआईआर-आईएचबीटी के बारे में अन्य किसानों के माध्यम से पता चला था तथा उनसे मिलकर उन्होंने मिशन की पूरी जानकारी ली और आईएचबीटी से संपर्क किया जिसके बाद मानो उनकी जिंदगी बदल गयी ।

फ्लॉरिकल्चर मिशन के माध्यम से नए किसानों को फूलों की खेती के क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर मिलता है। इससे पुराने किसानों को भी लाभ होता है, लेकिन खासकर उन किसानों को जो इस व्यवसाय में नए हैं। फूलों की खेती शुरू करने के लिए, पहले कम क्षेत्र में उपयुक्त भूमि का चयन करना और बाजार का अध्ययन करना आवश्यक होता है। आर्थिक दृष्टि से, फूलों की खेती अन्य कृषि उत्पादों की तुलना में अधिक लाभकारी सिद्ध हो सकती है और वे 25 लाख रुपये तक की आय सालाना प्राप्त कर रहे हैं ।

राजेन्द्र कुमार का संदेश

फूलों की खेती एक ऐसा व्यवसाय है जो न केवल मुझे आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि साथ ही नए किसानों को भी आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। फ्लॉरिकल्चर मिशन जैसी पहल के माध्यम से, हम सभी मिलकर इस क्षेत्र में नए रूप से किसानी को दिशा दे सकते हैं और भारत के लिए विकास की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

26. नारी सशक्तिकरण की मिसाल बन रही है बैजनाथ की मीरा देवी;

मेरा नाम मीरा देवी है, मैं मांडेहर, बैजनाथ की रहने वाली हूँ। मैंने ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई की है और मेरी उम्र 44 साल है। मैं वर्ष 2015 से फूलों की खेती कर रही हूँ। पहले हम अपनी डेयरी चलाते थे और अन्य कृषि उत्पादों की खेती करते थे, लेकिन फूलों की खेती के बारे में हमारी रुचि तब बढ़ी जब हमने अखबारों व समाचारों में सोलन और बिलासपुर के किसानों की फूलों की खेती के बारे में सुना। हमने वहां जाकर उनके खेतों को देखा और उन्हे देखकर हमें भी फूलों की खेती करने का निर्णय लिया। हमने शुरुआत में ग्लेडियोलस लगाए और अब कार्नेशन उगा रहे हैं। हमारी खेती का क्षेत्रफल 3500 वर्ग मीटर है।
फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में मुझे मेरे गाँव के नागेंदर जी से पता चला। उन्होंने मुझे बताया कि सीएसआईआर-आइएचबीटी मे फूलों के पौधों पर सब्सिडी उपलब्ध हैं। तब मैंने आइएचबीटी के वैज्ञानिक डॉ. भव्य से मिलकर सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे मे अच्छे से जानकारी ली। इसके बाद मैने कार्नेशन की खेती भी शुरू की। उन्होंने मेरी बहुत सहायता की व आज भी समय-समय पर में उनसे फोन पर फूलों की बीमारियों और उनके उपचार के बारे में सलाह व जानकारी लेती रहती हूँ। हमारी फूलों की मार्केट दिल्ली है और हमें प्रति वर्ष 1000 वर्ग मीटर से 8-9 लाख तक की कमाई हो जाती है।

मीरा देवी का संदेश

मेरा किसान भाइयों-बहनों को यही संदेश है कि फूलों की खेती से आप घर बैठकर भी अच्छी कमाई कर सकते हैं। बाहर जाकर नौकरी करने मे इतनी कमाई नहीं होती है और आजकल बेरोज़गारी की समस्या के समाधान के लिए फूलों की खेती एक बेहतर विकल्प है।

27. फूलों की खेती: एक लाभकर व्यवसाय;

मेरा नाम सलिल उपाध्याय है और मैं कुल्लू, हिमाचल प्रदेश का निवासी हूँ। मेरी उम्र 55 वर्ष है और मेरी शिक्षा ग्रेजुएशन तक पूरी हुई है। वर्ष 1992 से मैं फूलों की खेती में जुट गया था। मेरे पास 35 बीघा ज़मीन है, जिसमें से मैं 3 बीघा ज़मीन पर फूलों की खेती करता हूँ।
फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुड़कर, फूलों की खेती ने मुझे अच्छे लाभ दिए हैं। मैंने पिछले वर्ष गेंदे की खेती की और मेरा कुल मिला कर खर्च 20,000 रुपये रहा हैं, जबकि मेरा लाभ 80,000 रुपये था। मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में डॉ. भव्य भार्गव से पता चला।

सलिल उपाध्याय का संदेश

इस मिशन के तहत फूलों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है और इससे किसानों को अच्छी तकनीकी सहायता मिल रही है। मेरा किसान भाइयों को यह संदेश है कि यदि उनके पास रोजगार के साधन नहीं हैं, तो वे फूलों की खेती की और ध्यान दें। यह व्यवसाय न केवल लाभकारी है बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का भी सही उपयोग करने में मदद करता है। फूलों की खेती से न केवल अच्छी कमाई होती है, बल्कि इससे कृषि व्यवसाय में नए और विकसित कृषि प्रकियाओ मे भी कदम बढ़ाए जा सकते है। इस उद्यम से प्राप्त अपने अनुभवों को साझा करने का मुझे गर्व है और मुझे उम्मीद है कि यह संदेश और जानकारी हमारे किसान भाइयों के लिए प्रेरणाप्रद साबित होगी।

28. फूलों की खेती: गाँव चकमोह से संघर्ष और सफलता की कहानी;

मेरा नाम सोमदत्त है और मैं चकमोह , ज़िला हमीरपुर का निवासी हूँ। मेरी 40 वर्ष की उम्र है और मैंने ग्रेजुएशन तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्ष 2009 से मैंने फूलों की खेती की शुरुआत की और इस कार्य में कार्नेशन और जरबेरा के फूलों को अपनी खेती में अपनाया। मेरी ज़मीन कुल 78 कनाल है, जिसमें से मैं 20 से 22 कनाल पर फूलों की खेती करता हूँ।
पहले मैं मक्का और सब्जियों की खेती करता था, लेकिन वर्ष 2009 में फूलों की खेती में आय का अच्छा साधन देखकर मैंने इसमें अपने आजीविका की दिशा बदली। फूलों की खेती से मुझे 4 लाख का लाभ हुआ है।

सोमदत्त का संदेश

मुझे फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में डॉ. भव्य भार्गव से पता चला, जिन्होंने मुझे इस क्षेत्र में और भी संज्ञानात्मक जानकारी प्राप्त करने में मदद की। फूलों की खेती एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें किसान भाइयों के लिए बहुत सारे अवसर हैं। यह विशेषकर उन क्षेत्रों के लोगों के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है, जो उत्सुकता और समर्थन के साथ नए क्षेत्र में कदम रखने को तैयार हैं।
फूलों की खेती में सफलता पाने के लिए, सही जानकारी, व्यवस्था और धैर्य की आवश्यकता होती है। यदि आप इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने का सोच रहे हैं, तो फूलों की खेती एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

29. फूलों की खेती: एक अच्छा विकल्प रोज़गार के लिए;

मेरा नाम परविंदर है और मैं करनपुर, पंचकुला, हरियाणा का निवासी हूँ। मेरी शिक्षा 11 वीं तक हुई है और मैंने वर्ष 2016 से फूलों की खेती शुरू की है। मेरी खेती में मुख्य रूप से गुलाब, जर्बेरा, गुलदाउदी और रजनीगंधा उगाई जाती है। मेरे पास 8 एकड़ जमीन है, जिसमें से मैंने 2 एकड़ पर फूलों की खेती की है।
फूलों की खेती से मुझे कुल 10 लाख रुपये का खर्चा आया है, लेकिन इससे मुझे 4 लाख रुपये का लाभ हुआ है। मैंने फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में चंडीगढ़ के किसानों से जानकारी प्राप्त की और इससे मेरे काम को और भी प्रगति मिली।
फूलों की खेती एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें न केवल मैंने आर्थिक स्थिरता प्राप्त की है, बल्कि इससे मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। इस क्षेत्र में काम करने से मुझे पर्यावरण के प्रति भी जागरूकता हुई है और मैंने यह सीखा है कि समय और मेहनत से अगर हम सही दिशा में कदम रखें तो किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकते हैं।

परविंदर का संदेश

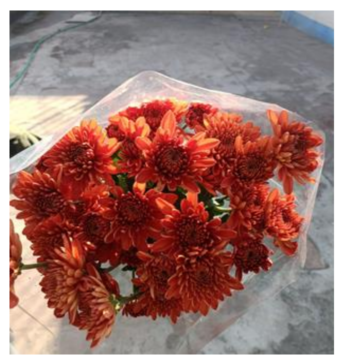

मेरा संदेश किसान भाइयों तक यह है कि अगर आपके पास रोजगार के लिए कोई साधन नहीं है तो फूलों की खेती एक अच्छा विकल्प हो सकता है। यह विकल्प आपको न केवल आर्थिक स्थिरता देगा, बल्कि आपके क्षेत्र में किसानों के साथ मिलकर विकास का अवसर भी प्रदान करेगा।

30. गेंदे की खेती: विक्रम ओहरी की सफलता की कहानी;

कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के विक्रम ओहरी ने अपनी गेंदे की खेती से एक शानदार सफलता हासिल की है। 43 वर्षीय विक्रम जी, जिन्होंने बी.टेक की डिग्री प्राप्त की है और पेशे से एक शिक्षक ने खेती के क्षेत्र में भी अपने हुनर का परिचय दिया है। पहले विक्रम जी ने सब्जियों की खेती करने का सोचा, लेकिन सब्जियों में उतना फ़ायदा नहीं मिला। फिर उसके बाद उन्हे अपने मित्र से फूलों की खेती का पता चला।

फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुड़कर वर्तमान में, उन्होंने 1.5-2 कनाल में गेंदे की खेती की है और इससे सालाना 25,000 रुपये तक का लाभ हो रहा है। यह उनके लिए एक सफल निर्णय साबित हुआ है। अब विक्रम जी अपने फूलों की खेती को और बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। वे लीज पर अतिरिक्त जमीन लेने का सोच रहे हैं और आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करके अपनी खेती को और बेहतर बनाना चाहते हैं।

इसके अलावा, वे लोकल मार्केट एवं दिल्ली जैसे बड़े बाजरों के अलावा ऑनलाइन बिक्री पर भी ध्यान देने का विचार कर रहे हैं ताकि उनके फूलों की बिक्री बढ़ सके।

अगर आपने लीज पर ज़मीन ली है तो ली गई ज़मीन की मिट्टी और जलवायु की जाँच करें। प्रौद्योगिकी का उपयोग जैसे ड्रिप इरिगेशन और जैविक खाद का प्रयोग करने से खेती अच्छी होती है। मार्केटिंग का ज्ञान होना बहुत जरूरी है, आस-पास के बाजारों के साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग कर सकते है।

गेंदे के अलावा अन्य फूलों की किस्में भी लगाएं। विक्रम जी की सफलता की कहानी यह बताती है कि मेहनत और सही योजना से खेती में भी बड़ा मुनाफा कमाया जा सकता है। उनकी यह यात्रा अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

31 फूलों की खेती: सफल किसान मदन गोपाल की कहानी;

फूलों की खेती के प्रति मेरा आकर्षण और लगाव लंबे समय से रहा है। मेरा नाम मदन गोपाल है, और मैं कुल्लू ज़िले के भुंतर गांव का निवासी हूँ। मैंने दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई की है और वर्तमान में फूलों की खेती कर रहा हूँ।

मेरी फूलों की खेती की यात्रा लगभग चार साल पहले शुरू हुई थी। पहले मैं पॉलिहाउस में सब्जियों की खेती करता था, लेकिन नेमाटोड की समस्या के कारण फसलें सूखने लगीं। इसी समस्या के समाधान के रूप में, आई एच बी टी संस्थान ने मुझे गेंदा लगाने का सुझाव दिया। इस सुझाव को मानते हुए, मैंने गेंदे की खेती शुरू की।

इसके बाद, मुझे अपने मित्रों से पालमपुर में सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में पता चला। मैंने वहाँ जाकर अपना रेजिस्ट्रेशन कराया और गेंदे के पौधे प्राप्त किए। फूलों की खेती के लिए मैंने 1100 वर्ग मीटर में पॉलिहाउस स्थापित किया है। पॉलिहाउस में मैंने जिप्सोफिला और लिलियम के पौधे लगाए हैं। इन पुष्पीय पौधों को नियंत्रित वातावरण में बढ़ने से लाभ मिलता है। इसके अलावा, मैंने खुले वातावरण में गेंदे की खेती की है, जो सहजता से खुली धूप और हवा में बढ़ते है।

फूलों की खेती से मुझे सालाना 4 लाख रुपये तक का लाभ होता है। गेंदा, लिलियम और जिप्सोफिला की बिक्री से प्राप्त आय ने मेरे व्यवसाय को सशक्त किया है। फूलों की खेती एक लाभकारी और संतोषजनक व्यवसाय साबित हो सकती है, बशर्ते उचित योजना और मार्केटिंग की समझ हो।

मदन गोपाल का संदेश

मेरा अन्य किसान भाइयों को यही सुझाव है कि अगर उनके पास किसानी का काम है तो वे भी फूलों की खेती कर सकते हैं। हालांकि, शुरुआत में मार्केटिंग की योजना बनाना महत्वपूर्ण है। उचित मार्केटिंग न होने पर उत्पाद बेकार हो सकते हैं, इसलिए खेती शुरू करने से पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि उत्पादों की बिक्री के लिए मार्केटिंग की व्यवस्था हो।

फूलों की खेती ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी है और इसे एक सफल व्यवसाय के रूप में स्थापित किया है। यह न केवल आर्थिक लाभ प्रदान करती है, बल्कि खेती के प्रति उत्साह और लगाव भी बनाए रखती है। उम्मीद है कि मेरी इस कहानी से अन्य किसान भी प्रेरित होंगे और फूलों की खेती को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सशक्त करेंगे।

32. फूलों की खेती से जीवन में सुधार: एक सफल किसान की कहानी;

मेरा नाम विनय है और मैं शिमला का निवासी हूँ। मेरी उम्र 40 वर्ष है और मैंने वर्ष 2021 से फूलों की खेती शुरू की है। इससे पहले, मैं सब्जियाँ उगाता था। वर्तमान में मेरे पास 35 बीघा ज़मीन है, जिसमें से 15 बीघा ज़मीन पर मैं फूलों की खेती करता हूँ।
मेरी फूलों की खेती में सूरजमुखी, ग्लेडियोलस, गुलदाउदी और कार्नेशन शामिल हैं। इस खेती से मुझे काफी मुनाफा हो रहा है। मेरी जानकारी के अनुसार, मैंने पहली बार फूलों की खेती के लिए ग्लेडियोलस के 21,000 कॉर्म सीएसआईआर-आईएचबीटी से प्राप्त किए। इसके बाद, मैंने कार्नेशन और गुलदाउदी के पौधे भी वही से लिए। ग्लेडियोलस के 50,00 पौधों से लगभग 25,000 रुपये तक की आय हो जाती है। गुलदाउदी के 35,000 पौधों से 1.5 से 2 लाख रुपये तक का लाभ होता है। 1000 वर्ग मीटर एरिया मे कार्नेशन लगाने से 1.5 लाख रुपये तक की कमाई हो जाती है। कुल मिलाकर, सालाना 4 लाख रुपये तक का शुद्ध लाभ हो जाता है।

किसानों के लिए विनय का संदेश

किसान भाइयों के लिए मेरा संदेश यही है कि वर्तमान में स्वरोजगार एक अच्छा माध्यम है अपनी आजीविका को बढ़ाने हेतु, ऐसे में फूलों की खेती एक अच्छा विकल्प है, जो न केवल आर्थिक स्थिति को सुधार सकता है बल्कि जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार ला सकता है। इस व्यवसाय को अपनाकर आप भी अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं और एक सफल किसान बन सकते हैं।

33. प्रेम सिंह ने फूलों की खेती मे मंडी के गाँव से बनाई देश-भर मे अपनी पहचान;

मेरा नाम प्रेम सिंह है और मैं धनोटी, ज़िला मंडी का निवासी हूँ। मैंने अपनी शिक्षा बी.ए तक पूरी की है। वर्ष 2022 से पहले, मैं प्राइवेट नौकरी कर रहा था, लेकिन उससे मेरी आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नही हुआ। जिससे मुझे काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। तब मुझे मेरे गांव के लोगों से सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में पता चला, जिसने मुझे किसानी में एक नई दिशा दिखाई । मैंने सीएसआईआर-आईएचबीटी से फूलों की खेती पर प्रशिक्षण भी लिया है, जिसमे हमे फूलों के रख-रखाव, बीमारियों व अन्य महत्वपुर्ण जानकारियाँ प्राप्त हुई।
आजकल, मैंने 2 कनाल ज़मीन पर पॉलीहाउस स्थापित किया है, जिसमे मैं कार्नेशन की खेती कर रहा हूँ। इससे मुझे प्रति वर्ष लगभग 4-5 लाख रुपयों तक का फायदा हो जाता है, जो मेरे परिवार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मेरे इस कदम से न केवल मेरी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि मैं अपने क्षेत्र में नई रोजगार सृजन की भी संभावनाएं पैदा करने मे सक्षम रहा हूँ। हमारे मुख्य फूलो के बाज़ार स्थानीय व दिल्ली बाज़ार हैं।

प्रेम सिंह का संदेश

मुझे मेरे अनुभव से यह पता चला है कि कृषि विकास में नई तकनीकी तरीकों का अनुसरण करना समृद्धि और स्थायी आय के स्रोत के रूप में साबित हो सकता है। इसी के साथ ही मेरा उद्यम और जोश इस क्षेत्र के अन्य युवाओं को भी प्रेरित कर सकता है कि वे भी अपनी स्वावलंबन में कृषि क्षेत्र में काम करें।

34. मीनाक्षी राणा की फूलों की खेती में नई सोच की कहानी;

मेरा नाम मीनाक्षी राणा है, मेरी उम्र 51 वर्ष है और मैंने 12वीं तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्ष 2023 मे मैंने फूलों की खेती करने का निर्णय लिया और इस दिशा में कदम बढ़ाया। हमारे खेतों में हम गेंदे के फूल उगाते हैं, और हमारी फूलों की खेती 3 कनाल क्षेत्र में फैली हुई है।
फूलों की खेती के बारे में हमें फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में इंटरनेट के माध्यम से जानकारी मिली। इस जानकारी को प्राप्त करने के बाद, हमने सीएसआईआर-आईएचबीटी से संपर्क किया और उनसे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। इस जानकारी ने हमें अपनी खेती को और अधिक व्यवस्थित और लाभकारी बनाने में मदद की।
हमारी फूलों की बिक्री मुख्यतः स्थानीय बाजारों में होती है। विशेष रूप से शादी के मौसम में हमारी बिक्री में काफी बढ़ोतरी होती है। इसके अलावा, हम अपने फूलों को आसपास के मंदिरों में भी बेचते हैं। इसके साथ ही, हमने आस-पास की फूलों की नर्सरी से भी संपर्क किया है, जिससे हमें अपने व्यवसाय में नई दिशाएँ और अवसर प्राप्त हुए हैं।

मीनाक्षी राणा का संदेश

इस वर्ष हमें फसल का अच्छा दाम मिला था और हमारी मेहनत का फल मीठा साबित हुआ। भविष्य में, हम इस व्यापार को और बड़े स्तर पर विस्तारित करने की योजना बना रहे हैं। हमारी कोशिश है कि हम अपनी फूलों की खेती को और अधिक विकसित करें और इससे जुड़े व्यवसाय में नई ऊँचाइयों को छुएं। इस नई सोच और उद्यम के साथ, हम अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं।

35. भूप सिंह की फूलों की खेती में सफलता की कहानी;

मेरा नाम भूप सिंह है और मैं खूंगी ज़िला मंडी, हिमाचल प्रदेश का निवासी हूँ। मैंने राजनीति विज्ञान में एम.ए. किया है। पहले मैं टमाटर की खेती करता था, लेकिन उसमें मुझे अपेक्षित लाभ नहीं मिला। फिर, वर्ष 2016 से मैंने फूलों की खेती शुरू की, जो मेरे लिए एक लाभकारी विकल्प साबित हुआ।
सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में मुझे अपने ही गाँव के कुन्दन जी से जानकारी मिली। उन्होंने हमें सीएसआईआर-आईएचबीटी में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में भी बताया। इस प्रशिक्षण से हमें फूलों की खेती के रख-रखाव, बीमारियों और अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई, जो हमारे लिए बहुत फायदेमंद साबित हुई।
मेरे पास कुल 3 बीघा जमीन है, जिसमें से 2 बीघा पर मैं फूलों की खेती करता हूँ। मैंने अपने खेतों में कार्नेशन, जिप्सोफिला, अल्स्ट्रोमेरिया और लिलियम के फूल लगाए हैं। इनमें से 1.5 बीघा क्षेत्र में मैंने पॉलीहाउस भी लगाया है, जो फूलों की खेती में विशेष मददगार साबित हो रहा है।
हमारी मुख्य मार्केट दिल्ली है, जहाँ हमें अच्छे दाम मिल जाते हैं। टमाटर की खेती में अपेक्षित लाभ न मिलने के कारण मैंने फूलों की खेती को चुना, और अब यह व्यवसाय मेरे लिए लाभकारी साबित हो रहा है।

भूप सिंह का संदेश

मैं अपने साथी किसानों को यही संदेश देना चाहता हूँ कि फूलों की खेती एक अच्छा रोजगार विकल्प हो सकती है। इससे न केवल आर्थिक लाभ प्राप्त होता है, बल्कि मानसिक संतुष्टि भी मिलती है। इसलिए, मैं सभी किसानों को सलाह देता हूँ कि वे इस क्षेत्र में कदम रखें और फूलों की खेती के लाभों का अनुभव करें।

36. फूलों की खेती: एक सफल व्यवसाय;

मेरा नाम कांती वल्लव है और मैं नैनीताल के गाँव बाजून में रहता हूँ। मैंने अपनी पढ़ाई दसवीं कक्षा तक पूरी की है और पिछले 10-12 सालों से फूलों की खेती का अध्ययन व इसमे किसानी कर रहा हूँ। मेरी ज़मीन पर 3-4 बीघा क्षेत्र में मैंने कार्नेशन, ग्लेडियोलस, गुलदाउदी और लिलियम जैसे विभिन्न प्रकार के फूल उगाए हैं। इस व्यापार को शुरू करने के लिए मुझे कांबोज जी के मार्गदर्शन का बहुत ही सहारा मिला है। उन्होंने एक सोसाइटी की स्थापना की थी जिसका मैं सदस्य बना। उनके मार्गदर्शन से हमने सीएसआईआर आईएचबीटी से फूलों के पौधे व फूलों की खेती मे सही जानकारी प्राप्त हुई हैं। हमारे फूलों का मुख्य बाज़ार हल्द्वानी और दिल्ली हैं। इस व्यापार में कमाई का स्तर बाज़ार की स्थिति पर निर्भर करता है, लेकिन अच्छे समय पर बाज़ार में सालाना 10 -15 लाख तक कमाई हो सकती है।

कांती वल्लव का संदेश

मेरा संदेश है कि यदि कोई फूलों की खेती करने की सोच रहा है, तो यह एक बहुत ही अच्छा व्यवसाय हो सकता है। इसे अच्छे से सीखकर आरंभ किया जाए तो यह किसानों के लिए एक अच्छी आय उत्पन्न करने वाला विकल्प हो सकता है।
मैं पालमपुर के सीएसआईआर आईएचबीटी का भी धन्यवाद करना चाहूँगा जिनके सहयोग और मार्गदर्शन से हमें इस उत्कृष्ट प्रकार की फूलों की खेती को आगे बढ़ाने में मदद मिली।

37. फूलों की खेती: एक विशेष अनुभव;

मेरा नाम नरेश कुमार है और मैं शिमला का निवासी हूँ। मेरी उम्र 47 वर्ष है और मैंने आठवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्ष 2021 से मैंने फूलों की खेती शुरू की है। इससे पहले, मैं शिमला मिर्च, आलू और फूलगोभी जैसी सब्जियों की खेती करता था। मेरे पास कुल 45 बिघा भूमि है, जिसमें से 9-10 बिघा क्षेत्र में मैं फूलों की खेती करता हूँ। मैंने अपनी ज़मीन पर कार्नेशन, ग्लेडियोलस, गेंदा और गुलदाउदी जैसे विभिन्न प्रकार के फूल लगाए हैं। गुलदाउदी को 1135 वर्ग मीटर क्षेत्र में, ग्लेडियोलस को 6 बिघा में और गेंदा को 1 बिघा में उगाया गया है, सारे फूलों को बेचकर सालाना लगभग 11-12 लाख रुपये की कमाई हो जाती है।
सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत हमें अच्छे पौधे उपलब्ध हुए है व फूलों की खेती के बारे मे भी सही जानकारी प्राप्त हुई है। फूलों की खेती में एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इससे पर्यावरण को भी फायदा पहुंचता है। फूलों की खेती से स्थानीय पर्यावरण को हरा-भरा बनाए रखने में मदद मिलती है।

नरेश कुमार का संदेश

मेरा संदेश है कि अगर किसान भाइयों को फूलों की खेती में रुचि है, तो यह सब्जियों की खेती के मुकाबले अधिक मुनाफा दिलाने वाला विकल्प हो सकता है।

38. फूलों की खेती: एक सफल किस्सा;

मेरा नाम टिकम सिंह है और मैं मंडी, हिमाचल प्रदेश का निवासी हूँ। मेरी उम्र 45 वर्ष है और मैंने बारहवीं तक की शिक्षा प्राप्त की है। फूलों की खेती मैंने 2012-2013 मे शुरू की थी। इससे पहले, मैं धान, मक्का और सब्जियों की खेती करता था।
मेरे पास 5 बीघा भूमि है, जिसमें से 2 बीघा क्षेत्र में मैं फूलों की खेती करता हूँ। मैंने अपनी ज़मीन पर कार्नेशन, लिलियम, गुलदाउदी, गेंदा, गुलाब और जरबेरा जैसे विभिन्न प्रकार के फूल उगाए हैं, इन सभी फूलों मे से मैं कार्नेशन पर ज्यादा स्तर पर काम करता हूँ, कार्नेशन को मैंने 1000 वर्ग मीटर क्षेत्र में लगाया है, जिसमे हमें 2-3 लाख रुपये तक का लाभ प्राप्त हो जाता है।
सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन से हमें बहुत फायदा हो रहा है, जहां से हमें कार्नेशन के उच्च गुणवत्ता वाले पौधे मिले तथा साथ ही उनके रख-रखाव की सही जानकारी भी प्राप्त हुई है।

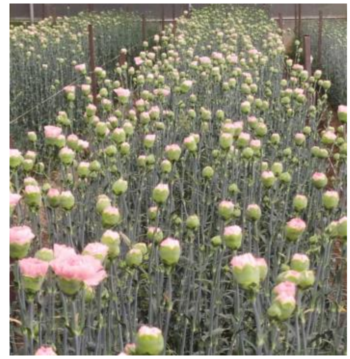

टिकम सिंह का संदेश

किसान भाइयों को मेरा संदेश है कि फूलों की खेती में सब्जियों की खेती के मुकाबले अधिक मुनाफा हो सकता है। यह व्यापार न केवल आर्थिक रूप से फायदेमंद होता है, बल्कि पर्यावरण के लिए भी उपयुक्त है।

39. फूलों की खेती: किसान इंद्र सिंह का अनुभव और संदेश;

मेरा नाम इंद्र सिंह है और मैं मंडी, हिमाचल प्रदेश का निवासी हूँ। मेरी उम्र 36 वर्ष है और मैंने दसवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्ष 2010 से मैंने फूलों की खेती करना शुरू की थी। इससे पहले, मैं सेब और सब्जियों की खेती करता था। मेरे पास कुल 6 बिघा भूमि है, जिसमें से 1.5 बिघा क्षेत्र में मैं फूलों की खेती कर रहा हूँ।
मैंने अपनी ज़मीन पर गुलाब, कार्नेशन, जरबेरा, लिलीयम, गुलदाउदी और गेंदा जैसे विभिन्न प्रकार के फूल उगाए हैं। कार्नेशन और लिलियम से मिलकर सालाना 5-6 लाख रुपये तक का लाभ होता है। सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन से हमें बहुत फायदा हो रहा है। इस मिशन के माध्यम से हमें फूलों की खेती में बहुत कुछ नया सीखने का अवसर मिल रहा है। साथ ही, मैं सीएसआईआर-आईएचबीटी का भी धन्यवाद करना चाहूंगा। जब भी मुझे फूलों की खेती में कोई समस्या आई, उन्होंने हमेशा उसका समाधान दिया।

इंद्र सिंह का संदेश

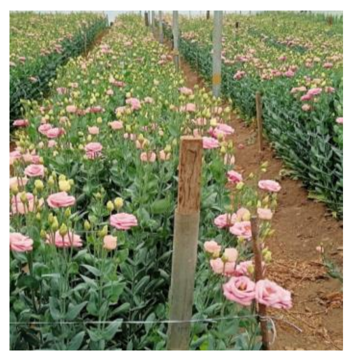

मेरा संदेश यही है कि फूलों की खेती से अन्य फसलों की खेती के मुकाबले अधिक लाभ हो सकता है। यह व्यवसाय न केवल आर्थिक रूप से प्रोत्साहन देता है, बल्कि इससे पर्यावरण को भी फायदा पहुंचता है। फूलों की खेती से स्थानीय प्रजातियों को बचाव में मदद मिलती है और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में यह खेती सहायक होती है। मैं अपने सभी किसान भाइयों को इस उच्च लाभकारी क्षेत्र में फूलों की खेती से जुड़ने के लिए कहना चहूँगा।

40. अजय मनकोटिया की फूलों की खेती में सफलता की कहानी;

अजय मनकोटिया, ज़िला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के गाँव कजलाखु के निवासी हैं, जिन्होंने अपने कृषि जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाते हुए गेंदे की खेती की ओर कदम बढ़ाए है। 39 वर्षीय अजय ने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की है और पहले गेहूँ की खेती करते थे। हालांकि, वर्ष 2022 में उन्होंने गेंदे के फूलों की खेती शुरू की और इसके बाद से उनकी फूलों की खेती ने एक नई दिशा ले ली है।

अजय के पास कुल 150 कनाल ज़मीन है, जिसमें से उन्होंने 7 कनाल ज़मीन पर गेंदे की खेती की है। पहले गेहूँ की खेती में उन्हें सामान्य लाभ होता था, लेकिन गेंदे की खेती से उन्हें अपेक्षाकृत अधिक लाभ हुआ है। इस नई दिशा ने उन्हें यह अनुभव कराया कि फूलों की खेती अधिक लाभकारी हो सकती है।

सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में अजय को एक मित्र से जानकारी मिली, जो सीएसआईआर पालमपुर में कार्यरत थे। इस जानकारी के माध्यम से उन्हें फूलों की खेती के लिए आवश्यक पौध सामग्री और सही मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अजय ने बताया कि उनके द्वारा गेंदे की खेती में कुल 5000 रुपये का खर्च आया और उन्होंने 25000 रुपये का लाभ प्राप्त किया।
अजय मनकोटिया का यह मानना है कि फूलों की खेती न केवल एक अच्छा रोजगार का साधन है, बल्कि यह किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी फायदेमंद हो सकती है। उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुए अपने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वे फूलों की खेती की ओर ध्यान दें, क्योंकि यह एक स्थिर और लाभकारी विकल्प हो सकता है।

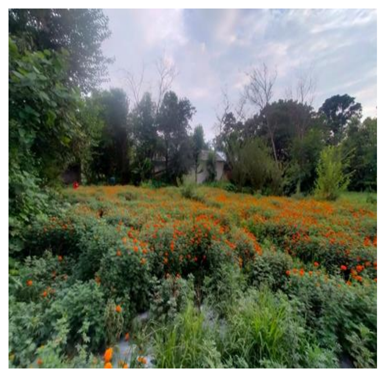

सीएसआईआर पालमपुर से प्राप्त मार्गदर्शन से अजय की खेती ने एक नई दिशा और मजबूती प्राप्त हुई है। उनके अनुभव और सफलता की कहानी यह साबित करती है कि सही संसाधनों और उचित मार्गदर्शन के साथ कोई भी किसान अपनी फसल की आय बढ़ा सकता है और अपने जीवन में सुधार ला सकता है।

अजय की यह यात्रा उन सभी किसानों के लिए प्रेरणादायक है जो कृषि में नवाचार और परिवर्तन की ओर सोच रहे हैं। उनका अनुभव यह दर्शाता है कि सही दिशा और मेहनत के साथ किसी भी कृषि गतिविधि में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

41. गुरविन्द्र सिंह की फूलों की खेती में सफलता की प्रेरक कहानी;

गुरविन्द्र सिंह, जो देहरा, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के निवासी हैं, इन्होंने 43 वर्ष की उम्र में खेती के क्षेत्र में एक नई दिशा अपनाई है। गुरविन्द्र ने वर्ष 2021 में गेंदा और गुलाब की फूलों की खेती शुरू की। इससे पहले वे प्राकृतिक खेती करते थे, लेकिन फूलों की खेती ने उन्हें अधिक आकर्षित किया क्योंकि यह आय का एक अच्छा साधन साबित हुई है।

गुरविन्द्र के पास कुल 10 कनाल ज़मीन है, जिसमें से उन्होंने 4 कनाल पर गेंदे व गुलाब की खेती की शुरुआत की। उनके अनुसार, फूलों की खेती में कुल खर्च 12,000 से 15,000 रुपये के बीच आया, और उन्हें 45,000 रुपये का लाभ प्राप्त हुआ। यह लाभ देखकर उन्होंने फूलों की खेती को एक स्थिर और लाभकारी विकल्प मान लिया।गुरविन्द्र ने सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए आयोजित एक सभा में भाग लिया, जहां विकास सोनी जी ने उन्हें और अन्य किसानों को फूलों की खेती और सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस सभा में हुए मार्गदर्शन ने गुरविन्द्र की खेती में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उन्हें सही दिशा में काम करने की प्रेरणा मिली।

गुरविन्द्र सिंह का यह संदेश है कि फूलों की खेती एक शानदार रोजगार का साधन हो सकती है। सीएसआईआर पालमपुर से प्राप्त पौधारोपन सामग्री और समय पर मिलने वाले उचित मार्गदर्शन ने उनकी फूलों की खेती को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गुरविन्द्र की सफलता की कहानी यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन और मेहनत के साथ, किसी भी किसान को अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो सकती है। उनकी यात्रा अन्य किसानों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है, जो कृषि में नए अवसरों को अपनाने की सोच रहे हैं।

42. राजीव कटोच की गेंदे की खेती में सफलता की कहानी;

राजीव कटोच, जो गाँव खुड्लि, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के निवासी हैं, जिन्होंने 47 वर्ष उपरांत खेती के क्षेत्र में एक नई दिशा अपनाई है। स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने वाले राजीव ने वर्ष 2021 में गेंदे की खेती शुरू की। उनके पास कुल 10 कनाल ज़मीन है, जिसमें से उन्होंने 2 कनाल ज़मीन पर फूलों की खेती की शुरुआत की है।

राजीव ने गेंदे की खेती में कुल 5000 रुपये का खर्च किया और इसके बदले में उन्हें 30,000 रुपये का लाभ प्राप्त हुआ। उनका अनुभव यह दर्शाता है कि फूलों की खेती अधिक लाभकारी हो सकती है।

राजीव ने सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन की जानकारी सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर मे जाकर प्राप्त की और फूलों की खेती की शुरूआत की । यहाँ से उन्हें न केवल पौध सामग्री मिली, बल्कि समय-समय पर खेती हेतु उचित मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

राजीव का संदेश

गेंदे की खेती एक अच्छा और लाभकारी विकल्प हो सकता है। सीएसआईआर आई एच बी टी पालमपुर से प्राप्त मार्गदर्शन ने उनकी खेती की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राजीव कटोच की सफलता की कहानी उन किसानों के लिए प्रेरणादायक है जो कृषि में बदलाव और नवाचार की दिशा में सोच रहे हैं। उनकी यह यात्रा यह साबित करती है कि सही मार्गदर्शन और उचित संसाधनों के साथ, खेती को अधिक लाभकारी और सहज बनाया जा सकता है।

43. किशोर कुमार: फूलों की खेती में सफलता की कहानी;

किशोर कुमार, जो गाँव बनसयार, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश के निवासी हैं, इन्होंने 43 वर्ष की उम्र में खेती के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया है। स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद किशोर ने वर्ष 2019 में कार्नेशन और जिप्सोफिला की फूलों की खेती शुरू की। इससे पहले वे सेब की खेती करते थे, लेकिन फूलों की खेती उनके लिए अधिक लाभकारी विकल्प साबित हुआ है। किशोर के पास कुल 5 बीघा ज़मीन है, जिसमें से उन्होंने 750 वर्ग मीटर पर फूलों की खेती की है। एक सीजन मे फूलों की खेती से उन्हे इस बार 3.50 लाख रुपये का लाभ प्राप्त हुआ है। जो की उनके व उनके परिवार को आर्थिक लाभ पहुँचाने मे मददग़ारी साबित हुआ है। फूलों की खेती के बारे में जानकारी किशोर ने डॉ. भव्य भार्गव से प्राप्त की, जिन्होंने उन्हें फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में बताया। सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर से उन्हें समय-समय पर पौध सामग्री और खेती के लिए उपयोगी सलाह मिलती रही है, जिसने उनकी खेती की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

किशोर कुमार का यह संदेश

फूलों की खेती एक उत्कृष्ट आय का साधन हो सकती है। उनका अनुभव यह दर्शाता है कि सही मार्गदर्शन और संसाधनों के साथ फूलों की खेती में अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। किशोर की सफलता की कहानी अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो अपने कृषि व्यवसाय में बदलाव और नवाचार की दिशा में सोच रहे हैं। उनकी यात्रा यह साबित करती है कि मेहनत और सही दिशा में की गई कोशिशें बड़ी सफलता का कारण बन सकती हैं।

44 . गंगा राम का मिस्त्री से फूलों की खेती का सफर;

मेरा नाम गंगा राम है और मैं ज़िला मंडी का निवासी हूँ। मेरी उम्र 49 वर्ष है और मैंने दसवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है। मैंने वर्ष 2023 में फूलों की खेती की शुरुआत की। इसके पहले, मैं मिस्त्री का काम करता था और साथ ही सेब और सब्जियाँ भी लगाता था।

फूलों की खेती में मैंने लिलियम और गुलदाउदी की फसलों की शुरुआत की है। मैंने 4 बिघा ज़मीन पर इन फूलों की खेती की है। सालाना मुनाफा 2-2.5 लाख रुपए तक हो जाता है, जो अन्य फसलों की तुलना में काफी अच्छा है।

फूलों की खेती की जानकारी और सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में मुझे कुन्दन लाल जी से पता चला। उन्होंने मुझे बताया कि आईएचबीटी पालमपुर में इस मिशन के तहत पौधे उपलब्ध हैं। इस जानकारी के आधार पर मैंने वहाँ जाकर पौधे प्राप्त किए और साथ ही तकनीकी प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

मेरा सभी किसान भाइयों को यही संदेश है कि फूलों की खेती को अपनाना चाहिए, क्योंकि इसमें सब्जियों की खेती की तुलना में अधिक मुनाफा है। फूलों की खेती से न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि यह एक नए और लाभकारी व्यवसाय की दिशा भी प्रदान करता है।

गंगा राम का यह संदेश

फूलों की खेती एक सुनहरा अवसर है, जो किसान भाइयों को बेहतर आय और नए अवसर प्रदान कर सकता है। इसलिए, सभी को इसे अपनाना चाहिए और अपने भविष्य को बेहतर बनाना चाहिए।

45. फूलों की खेती: भीम सिंह ने बनाया एक लाभकारी व्यवसाय;

मेरा नाम भीम सिंह है और मैं ज़िला मंडी का निवासी हूँ। मेरी उम्र 32 वर्ष है और मैंने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की है। मैंने वर्ष 2016 में फूलों की खेती की शुरुआत की। इससे पहले, मैं आलू, मटर जैसी सब्जियों की खेती करता था। फूलों की खेती में मैंने जिप्सोफिला और लिलियम की फसलों की शुरुआत की है। इन फूलों को मैंने लगभग 800 वर्ग मीटर क्षेत्र में लगाया है। फूलों की खेती के लिए प्रारंभिक खर्चा 2.5 से 3 लाख रुपए तक आता है, लेकिन सालाना मुनाफा 8 -10 लाख रुपए तक हो जाता है। सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में मुझे मेरे गाँव के किसान खुबे राम जी से जानकारी मिली। उन्होंने मुझे बताया कि इस मिशन के तहत आईएचबीटी पलमपुर में फूलों के पौधे 90% सब्सिडी पर उपलब्ध हैं और तकनीकी प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

भीम सिंह का संदेश

मैं सभी किसान भाइयों को यही सलाह देना चाहूंगा कि फूलों की खेती जरूर अपनाए । इसमें सब्जियों की खेती की तुलना में कहीं अधिक मुनाफा है और यह एक लाभकारी व्यवसाय हो सकता है। फूलों की खेती से न केवल आर्थिक रूप से लाभ होता है, बल्कि यह एक नई दिशा की ओर अवसर भी प्रदान करता है।

46. फूलों की खेती से किया कपूर सिंह ने लाभकारी व्यवसाय का अनुभव;

मेरा नाम कपूर सिंह है और मैं हिमाचल प्रदेश के मंडी ज़िले के थुनाग गांव का निवासी हूँ। मेरी उम्र 43 वर्ष है और मैंने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की है। पहले मैं सब्जियों की खेती करता था,लेकिन वर्ष 2018 में मैंने फूलों की खेती की ओर कदम बढ़ाया। इस बदलाव ने मेरी खेती की दिशा को पूरी तरह से बदल दिया।मैंने फूलों की खेती में लिलियम और कार्नेशन की किस्मों को अपनाया। ये दोनों फूलों की किस्में मेरे लिए अत्यंत लाभकारी साबित हुईं। वर्तमान में,मेरे पास कुल 6 बीघा ज़मीन है, जिसमें से 2 बीघा पर मैं फूलों की खेती कर रहा हूँ। एक सीज़न में फूलों की खेती की कुल लागत 2 लाख रुपये आई,और इसी पर मुझे 2 लाख रुपये का लाभ हुआ।फूलों की खेती में मिले इस शानदार लाभ ने मेरे व्यवसाय को एक नई दिशा दी है। मुझे सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर से फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत समय-समय पर खेती के लिए उपयोगी सलाह प्राप्त होती रहीहै,जिससे मेरी खेती को बेहतर बनाने में मदद मिली।

भीम सिंह का संदेश

मैं अपने किसान भाईयों को यही संदेश देना चाहता हूँ कि फूलों की खेती एक उत्कृष्ट आय का साधन हो सकती है।यदि सही दिशा और सलाह मिले,तो यह व्यवसाय न केवल लाभकारी होता है, बल्कि किसानों के लिए एक नए अवसर भी खोलता है।

47. राजकुमार को फूलों की खेती से मिला एक सुनहरा अवसर;

मेरा नाम राजकुमार है और मैं हिमाचल प्रदेश के मंडी ज़िले के थुनाग गांव का निवासी हूँ। मेरी उम्र 23 वर्ष है और मैंने वर्ष 2018 से फूलों की खेती शुरू की। इससे पहले मैं सब्जियों की खेती करता था,लेकिन बाद में मैंने फूलों की खेती की ओर कदम बढ़ाया।

फूलों की खेती में मैंने लिलियम,कार्नेशन और गेंदा की किस्मों को अपनाया। इन फूलों की खेती ने मुझे अधिक लाभकारी परिणाम दिए। वर्तमान में, मेरे पास कुल 5 बीघा ज़मीन है,जिसमें से 3 बीघा पर मैं फूलों की खेती कर रहा हूँ। एक सीज़न में फूलों की खेती की कुल लागत 8 से 10 लाख रुपये आई,और इस पर मुझे 3 लाख रुपये का लाभ हुआ।

फूलों की खेती के लाभकारी पहलू से मैं अपने किसान भाईयों को अवगत कराना चाहता हूँ। फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में मुझे मेरे गाँव के किसान भाईयों से जानकारी मिली और सीएसआईआर आईएचबीटी पालमपुर से समय-समय पर खेती के लिए उपयोगी सलाह भी प्राप्त होती रही है।

राजकुमार जी का संदेश

मैं अपने किसान साथियों को यही संदेश देना चाहता हूँ कि फूलों की खेती आय का एक शानदार साधन है । मेरा मानना यह भी है की फूलों की खेती प्रगति के साथ जुड़े रहने का एक उत्तम माध्यम है।

48. फूलों की खेती में सफलता की कहानी: बलबीर सिंह कंबोज की प्रेरणादायक यात्रा;

बलबीर सिंह कंबोज, जो उधम सिंह नगर, नैनीताल के नये गाँव के निवासी हैं, एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि कैसे एक व्यक्ति अपने धैर्य और मेहनत से कृषि क्षेत्र में शानदार सफलता प्राप्त कर सकता है।बलबीर जी की उम्र 58 वर्ष है और उन्होंने वर्ष 1992 में कृषि अर्थशास्त्र में एम.एस.सी की डिग्री प्राप्त की थी। उनकी यात्रा बीज कंपनी में काम करने से शुरू हुई, और बाद मे, वर्ष 1997 मे उन्होंने अपनी बीज प्रोसेसिंग यूनिट खोली। वर्ष 1997 से 2006 तक, उन्होंने इसी व्यवसाय में कार्य किया। लेकिन वर्ष 2007 में, उन्होंने फूलों की खेती की ओर रुख किया और विशेष रूप से कर्तित फूलों की खेती में कदम रखा। उन्होंने 1500 वर्ग मीटर के क्षेत्र में जर्बेरा और गुलाब के पौधे लगाए। इसके बाद, उन्होंने 18 एकड़ के तीन अलग-अलग स्थानों पर फूलों की खेती की। अपनी इस यात्रा के दौरान, उन्होंने सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन से संपर्क किया, जो उनकी सफलता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन से उन्हें उच्च गुणवत्तायुक्त पौध सामग्री, रख-रखाव के तरीके तथा फूलो की खेती मे होने वाली बीमारियों से बचने की जानकारी भी मिली, जिसमें कार्नेशन, जिप्सोफिला, लिमोनियम और गुलदाउदी शामिल थे। साथ ही साथ, इसके अतिरिक्त मिशन के अंतर्गत उनकी सोसाइटी, फ्लॉवर ग्रोअर वेलफेयर ट्रस्ट को कोल्ड चेन सुविधा भी प्रदान हुई, जिससे फूलों की ताज़गी और गुणवत्ता को लंबे समय तक बनाए रखना संभव हो सका।

बलबीर जी ने अपने 7000 वर्ग मीटर क्षेत्र में गुलाब, 7000 वर्ग मीटर में गुलदाउदी, 6000 वर्ग मीटर में गेंदा, 7000 वर्ग मीटर में जर्बेरा, 1000 वर्ग मीटर में कार्नेशन, 16000 वर्ग मीटर में ग्लेडियोलस, 10000 वर्ग मीटर में रजनीगंधा, 2000 वर्ग मीटर में लिलियम, 2000 वर्ग मीटर में जिप्सोफिला, 800 वर्ग मीटर में लिमोनियम और सूरजमुखी की खेती की।

उनकी मेहनत और सीएसआईआआर फ्लॉरिकल्चर की सही दिशा-निर्देशन के परिणामस्वरूप, उन्हें सभी फूलों से मिलाकर 80-85 लाख रुपये तक का प्रति वर्ष लाभ होता है। बलबीर सिंह कंबोज की सफलता की यह कहानी केवल उनकी मेहनत का फल नहीं है, बल्कि यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन और समर्पण के साथ किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है। इस प्रकार, बलबीर जी ने अपने अनुभव और संसाधनों का उपयोग कर फूलों की खेती को एक सफल व्यवसाय में बदल दिया, जो उनकी मेहनत और उद्योग के प्रति उनकी लगन का प्रमाण है।

49. महिला सशक्तिकरण की मिसाल: कमला देवी की जुबानी;

मेरा नाम कमला देवी है, और मैं ज़िला मंडी, हिमाचल प्रदेश की निवासी हूँ। मेरी उम्र 45 वर्ष है और मैंने 9वीं कक्षा तक की पढ़ाई की है। वर्ष 2010 में मैंने फूलों की खेती शुरू की, जबकि इससे पहले मैं और मेरा परिवार सेब के बगीचों और सब्जियों की खेती करते थे। हम शुरुवात से ही विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती करते आए हैं: 1000 वर्ग मीटर पर कार्नेशन, 4 बीघा पर लिलियम, 2.5 बीघा पर गेंदा, 200 वर्ग फुट में यूस्टोमा, और 400 वर्ग मीटर में ग्लेडियोलस के फूल लगाए है। इन फूलों की खेती से हमें सालाना 30-35 लाख रुपए का मुनाफा होता है।

वर्ष 2022 में मुझे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में पता चला, और फ्लॉरिकल्चर मिशन की सहायता से हमे फूलो की खेती मे ज्यादा मुनाफा हुआ । इस मिशन ने हमें फूलों के रख-रखाव, उनसे जुड़ी बीमारियों और नई तकनीकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की। सीएसआईआर-आईएचबीटी से हमने नियमित प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, जिसने हमें सही तकनीकों और बाजार की जानकारी मिलती रही है। अब हम फूलो की खेती मे आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर अधिक उत्पादन और बेहतर गुणवत्ता सुनिश्चित कर रहे हैं, जिससे हमें आर्थिक रूप से और भी अधिक लाभ हो रहा है।

फूलों की खेती में सफलता प्राप्त करने के बाद, मैंने देखा कि इस क्षेत्र में महिलाओं और छोटे किसान परिवारों के लिए भी अपार संभावनाएँ हैं। हम अपनी मेहनत और सही मार्गदर्शन के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं। मेरे अनुभव ने यह सिद्ध किया है कि कृषि में नवाचार और शिक्षा के जरिए हम अपनी स्थिति को बदल सकते हैं और आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

कमला देवी जी संदेश

मैं अपने किसान बहनों और भाइयों से यही कहना चाहूंगी कि फूलों की खेती एक बहुत अच्छा व्यवसाय है। इसकी सही जानकारी और तकनीक से हम न केवल आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि अपने परिवार का अच्छे से पालन-पोषण भी कर सकते हैं। मेहनत और सही मार्गदर्शन के साथ, हम कृषि में अपनी पूरी क्षमता को साकार कर सकते हैं और समाज में एक सशक्त पहचान बना सकते हैं।

50. दिनेश कुमार: सोलन के एक प्रेरणादायक किसान की कहानी;

दिनेश कुमार, जो झाझा, कंडाघाट, सोलन के रहने वाले है, उनका जीवन एक प्रेरणादायक किसान के तौर पर उदाहरण हैं जो की मेहनत की कहानी से भरपूर है।

दिनेश ने बारहवीं तक की पढ़ाई की है, लेकिन शुरुआत से ही उनकी रुचि किसानी में ही थी। उनका परिवार खेती के क्षेत्र से जुड़ा है और कुछ सालों से उन्होंने ग्रीनहाउस लगाना शुरू किया है। वे ग्रीनहाउस में कार्नेशन और गुलदाउदी फूलों की खेती करते हैं।

दिनेश करीबन 2000 वर्ग मीटर पर फूलों की खेती करते हैं तथा इससे वे प्रति वर्ष करीब 12 लाख रुपये की कमाई कर लेते है, जो की सिर्फ कार्नेशन और गुलदाउदी से ही मिल जाता है। अब वह दूसरे फूलों को लगाने के बारे मे भी सोच रहे हैं। यह उनकी लगन और मेहनत का ही कमाल है तथा सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन का उनकी फूलों की खेती मे महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

दिनेश जी का संदेश

किसी भी किसान की सफलता का राज उनकी मेहनत, जानकारी, और अनुभव में है। अगर किसान फूलों की खेती शुरू करना चाहते हैं, उन्हें पहले इस क्षेत्र के अनुभवी लोगों से सीखना चाहिए।

दिनेश जी की कहानी यह दिखाती है कि सपनों को पूरा करने के लिए कोई भी कठिनाई बड़ी नहीं होती, जब आप लगन से काम करते हैं और सही दिशा में अग्रसर होते हैं।

CSIR - Institute of Himalayan Bioresource Technology, Palampur
A Constituent Laboratory of the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)
Post Box. No. 06, Palampur - 176061 (H.P.) INDIA
Phone: +91-1894-233339, Fax : +91-1894-230433, E-mail : director@ihbt.res.in